अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

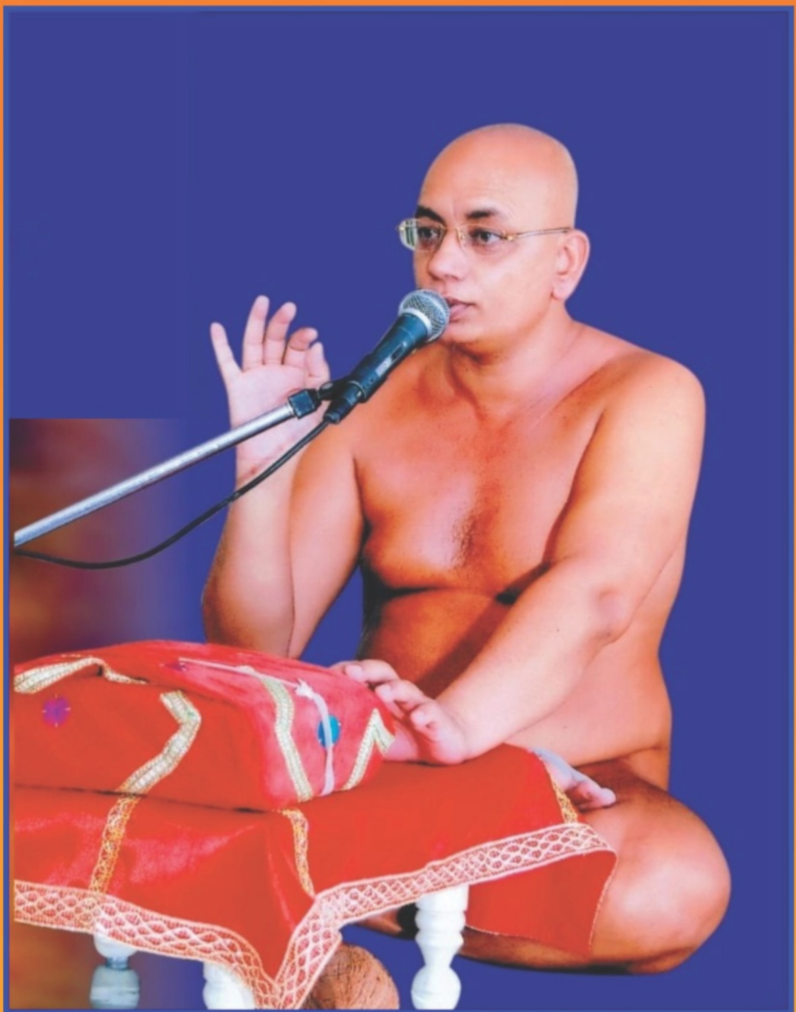

धर्मसभा को संबोधित करते हुय आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज
(मुनि अवस्था में, जयपुर)

वीर निर्वाण संवत् - 2547
अश्विन कृष्ण, वि.सं. 2078, सितंबर 2021
अंक : सत्तवान
वर्ष : पंद्रह

गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में अजमेर से पधारे विनोदजी बाकलीवाल सपरिवार आचायश्री का पाद प्रक्षालन करते

प्रवचन के पूर्व मंगलाचरण करते हुये आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ।

कलश स्थापना के दौरान उमड़ा जन सैलाव आचार्यश्री की मंगल देशना सुनते हुये।

आचार्यश्री की मांगलिक पूजन के अवसर पर द्रव्य समर्पित करते हुए तमिलनाडु से पधारे भक्तगण।

तमिलनाडु से पधारे श्रेष्ठी श्रीमान गौतमचंद जी एवं देवदास जी सम्मानित होते हुये।

आचार्यश्री का साहित्य प्राप्त करते हुये भोपाल से पधारे डॉ. अजित जैन एवं डॉ.सुधीर जैन सपरिवार।

पावन वर्षायोग २०२१ में प्रथम कलश स्थापनकर्ता श्रेष्ठी श्रीमान् संजय सराफ परिवार, लखनादौन।

संघस्थ मुनिश्री विभोरसागर जी महाराज की पूर्वावस्था की माँ सम्मानित होती हुई।

रजिस्ट्रेशन क्रं. MPHIN/2007/27127

त्रैमासिक

भाव विज्ञान

(BHAV VIGYAN)

वर्ष-पन्द्रह

अंक - सत्तावन

आशीर्वाद व प्रेरणा

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित

आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ।

• परामर्शदाता •

प्राचार्य डॉ. शीतलचंद जैन, जयपुर

मो. 9414783707, 8505070927

। **सम्पादक** ।

डॉ. अजित कुमार जैन,

MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स,

कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003

मो. : 7222963457, व्हाट्सएप: 9425601161

email : bhav.vigyan@gmail.com

• प्रबंध सम्पादक •

डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक

85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357

• सम्पादक मंडल •

पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)

डॉ. संजय जैन (एडवोकेट), इंदौर (म.प्र.)

डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)

इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)

श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

• कविता संकलन •

पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

• प्रकाशक •

श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन

MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 मो.: 9479978084

email : bhav.vigyan@gmail.com

• आजीवन सदस्यता शुल्क •

शिरोमणी संरक्षक	:	50,000 से अधिक
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3,100
आजीवन (स्थायी)सदस्यता	:	1,500

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक		पृष्ठ
1. आगम-अनुयोग [प्रश्नोत्तर-प्रदीप]	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	2
2. सम्यग्ज्ञान-भूषण व सिद्धांत-भूषण पद हेतु त्रैमासिक धर्म प्रश्न-पत्र एवं नियंमावली	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	15
3. तीर्थोदय काव्य में षोडसभावनाओं का व्यावहारिक रूप	- प्राचार्य डॉ. शीतलचन्द जैन, जयपुर	17
4. परिवर्तनमय संसार	- पंडित लालचंदजी जैन ''राकेश''	19
5. जैनधर्म की विशेषताएँ	- प. नाथूलालजी जैन शास्त्री	20
6. कोरोना काल में जैन दर्शन का महत्व	- इंजी.शोभित जैन दमोह	23
7. जैन ग्रंथों का सम्पूर्ण सार ''आगम अनुयोग''	- इंजी. बहिन ऋषिका जैन दमोह	27
8. मोक्षमार्ग में बहुउपयोगी तीर्थोदय काव्य....	- ब्र.वीरेन्द्र शास्त्री, हीरापुर	29
9. समाचार		35

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु भाव-विज्ञान धार्मिक परीक्षा बोर्ड, भोपाल द्वारा स्वीकृत

आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित

आगम-अनुयोग

[प्रश्नोत्तर-प्रदीप]

चरणानुयोग

प्र.1275 जिनागम में चरणानुयोग का लक्षण किस रूप है?

उत्तर जिनागम में गृहस्थों और मुनियों के चारित्र की उत्पत्ति, वृद्धि और उसकी रक्षामय आचारांग रूप चरणानुयोग कहा गया है।

प्र.1276 श्रुत स्कन्ध का आधारभूत आचारांग कितने पद प्रमाण है?

उत्तर श्रुत स्कन्ध का आधारभूत आचारांग अठारह हजार पद प्रमाण है।

प्र.1277 आचारांग कौन-से प्रमुख अधिकारों से निबद्ध और अर्थों से गम्भीर है?

उत्तर आचारांग मूलगुण, प्रत्याख्यान, संस्तर, स्तवाराधना, समयाचार, पंचाचार, पिंडशुद्धि, षडावश्यक, द्वादशानुप्रेक्षा, अनगार-भावना, समयसार, शीलगुण प्रस्तार और पर्याप्ति आदि अधिकार से निबद्ध होने से महान् अर्थों से गम्भीर है।

प्र.1278 आचारांग और किन विशेषों से सहित है?

उत्तर आचारांग लक्षण-व्याकरण, शास्त्र से सिद्ध पद, वाक्य और वर्णों से सहित है।

प्र.1279 आचारांग किन महानात्मा द्वारा उपदिष्ट है?

उत्तर घातिया कर्मों के क्षय से उत्पन्न हुए केवलज्ञान के द्वारा जिन्होंने अशेष गुणों और पर्यायों से खचित छह द्रव्य और नव पदार्थों को जान लिया है ऐसे जिनेन्द्र के द्वारा उपदिष्ट है।

प्र.1280 आचारांग किन महान आत्मा द्वारा रचित है?

उत्तर आचारांग बारह प्रकार के तपों के अनुष्ठान से उत्पन्न हुई अनेक प्रकार की ऋद्धियों से समन्वित गणधर देव के द्वारा रचित है।

प्र.1281 आचारांग किस आचार्य परम्परा से चला आ रहा है?

उत्तर जो मूलगुणों और उत्तरगुणों के स्वरूप भेद, उपाय, साधन, सहाय और फल के निरूपण करने में कुशल हैं ऐसे महान आचार्यों की परम्परा से चला आ रहा है ऐसा यह आचारांग नाम का पहला अंग है।

प्र.1282 मुनियों के मूल गुण किन्हें कहते हैं?

उत्तर तपादिक उत्तरगुणों के आधारभूत महाव्रतादिक रूप प्रधान अनुष्ठान को मुनियों के मूलगुण कहते हैं।

प्र.1283 मूल गुणों से विशुद्ध संयत कौन होते हैं?

उत्तर जो सं-सम्यक् प्रकार से यत-उपरत हो चुके हैं अर्थात् पाप-क्रियाओं से निवृत्त हो चुके हैं वे संयत कहलाते हैं। प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसांपराय, उपशांतकषाय, क्षीणकषाय, सयोगकेवली और अयोगकेवली इस प्रकार छठवें गुणस्थान से लेकर चौदहवें गुणस्थान तक के सभी मुनि संयत कहलाते हैं जो कि आदि में ७ और अन्त के ८ तथा मध्य से छह बार नव संख्या रखने से तीन कम नौ करोड़ (८,९९,९९,९९७) होते हैं।

प्र.1284 मूलगुणों के आचरण से संयत जीव इहलोक और परलोक में कौन-से फल को प्राप्त करते हैं?

उत्तर मूलगुणों का आचरण करते हुए संयत जीव इस लोक में पूजा, सर्वजन से मान्यता, गुरुता (बड़प्पन) और सभी जीवों से मैत्री भाव आदि को प्राप्त करते हैं तथा इन्हीं मूलगुणों के धारण व पालन से संयत जीव परलोक में देवों के ऐश्वर्य, तीर्थंकर पद, चक्रवर्ती, बलदेव आदि के पद और सभी जनों में मनोज्ञता-प्रियता आदि प्राप्त करते हैं तथा अंत में सिद्धत्व को भी अवश्य प्राप्त कर लेते हैं।

प्र.1285 साधक साधु के लिए साध्य क्या है?

उत्तर साधक-साधु के लिए सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप रत्नत्रय साध्य हैं या मूलगुणों द्वारा आत्मा का शुद्धस्वरूप साध्य है।

प्र.1286 साध्य की प्राप्ति के लिए उपाय या साधन क्या हैं?

उत्तर साध्य की प्राप्ति के लिए साधन यम और नियम रूप परिणाम हैं।

प्र.1287 यम और नियम किसे कहते हैं?

उत्तर शाश्वतिक यावत्जीवन के लिए होने वाला यम कहलाता है। और अल्पकालिक अवधि रूप होने वाला नियम कहलाता है।

प्र.1288 यम रूप परिणाम कौन-से कहलाते हैं?

उत्तर महाव्रत आदि आजीवन के लिए धारण करने योग्य होने से यम रूप कहलाते हैं।

प्र.1289 नियम रूप परिणाम कौन-से कहलाते हैं?

उत्तर सामायिक, प्रतिक्रमण आदि अल्पकालिक होने से या रसादिक का त्याग जो अल्पकालावधि के लिए होने से नियम कहलाते हैं।

प्र.1290 मुनियों के मूलगुण और उत्तरगुण कौन-से कितनी संख्या में होते हैं?

उत्तर मुनियों के महाव्रत और समिति आदि मूलगुण अट्ठाईस होते हैं तथा बारह तप और बाईस परीषह ये उत्तर गुण चौंतीस होते हैं। (मू.चा.टि.पृ.५)

प्र.1291 मुनि किन्हें कहते हैं?

उत्तर 'मौनं धारयतीति मुनिः' इस परिभाषा से जो मौन धारण करते हैं अर्थात् अपने वचनादिक से हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह रूप पापों को नहीं करते अपितु पाप वचनों से मौन धारण करते हैं वे मुनि कहलाते हैं।

प्र.1292 जिनवर किन्हें कहते हैं?

उत्तर कर्म शत्रु को जो जीतते हैं वे 'जिन कहलाते हैं'। उनमें वर अर्थात् श्रेष्ठ हैं वे जिनवर हैं। 'कर्मारातीन् जयन्तीति जिनास्तेषांवरा श्रेष्ठाः जिनवराः' (मू.ला., पृ.६)

प्र.1293 जिनवर ने यतियों के अट्ठाईस मूलगुण किस तरह के बतलाये हैं?

उत्तर पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पाँच इन्द्रियों का निरोध, छह आवश्यक, लोंच, आचेलक्य, अस्नान, क्षितिशयन, अदन्तधावन, स्थितिभोजन, और एक भक्त ये अट्ठाईस मूलगुण जिनेन्द्र देव या जिनवरों ने यतियों-मुनियों के लिए बतलाये हैं।

प्र.1294 महाव्रत इतने महान क्यों कहलाते हैं?

उत्तर ये महाव्रत प्राणियों की हिंसा की निवृत्ति में कारणभूत हैं और मोक्ष की प्राप्ति के लिए निमित्तभूत हैं तथा जिनका अनुष्ठान महान पुरुषों द्वारा किया जाता है अतः वे महान कहलाते हैं।

प्र.1295 समिति किसे कहते हैं?

उत्तर सम्यक् अयन अर्थात् प्रवृत्ति को समिति कहते हैं। सम्यक् अर्थात् शास्त्र में निरूपित क्रम से गमन आदि क्रियाओं में प्रवृत्ति करना समिति कही जाती हैं।

प्र.1296 पंच महाव्रत और समितियाँ किसके समान हैं?

उत्तर पंच महाव्रत मुख्य फसल के समान तथा पाँच समितियाँ व्रत की रक्षा हेतु बाड़ स्वरूप होती हैं।

प्र.1297 पांच इन्द्रिय निरोध किस तरह घटित होता है?

उत्तर पांच इन्द्रियों की विषय प्रवृत्ति नहीं करना रोध कहलाता है। सम्यक् ध्यान के प्रवेश में प्रवृत्ति करना अर्थात् धर्म, शुक्ल ध्यान में इन्द्रियों को प्रविष्ट करना यह इन्द्रिय निरोध कहलाता है।

प्र.1298 आवश्यक का लक्षण क्या है?

उत्तर अवश्य करने योग्य कार्य को आवश्यक कहते हैं। आवश्यक का दूसरा नाम निश्चय क्रिया भी है। अर्थात् सर्वकर्म के निर्मूलन या क्षय करने में समर्थ नियम विशेष को आवश्यक कहते हैं।

प्र.1299 केशलोंच करने का अर्थ क्या है?

उत्तर हाथों से मस्तक और मूँछ के बालों का उखाड़ना लोंच कहलाता है।

प्र.1300 अचलेकत्व की परिभाषा क्या है?

उत्तर चेल-यह शब्द उपलक्षण मात्र है, इससे श्रमण अवस्था के अयोग्य सम्पूर्ण परिग्रह को चेल शब्द से कहा जाता है। नहीं है चेल जिनके, वे अचेलक हैं, अचेलक का भाव अचेलकत्व है अर्थात् सम्पूर्ण वस्त्र, आभरण आदि का परित्याग करना अचेलक्य मूलगुण कहलाता है।

प्र.1301 अस्नान गुण से क्या तात्पर्य है?

उत्तर जल का सिंचन, उबटन, (तैलमर्दन) अभ्यंगस्थान आदि का त्याग अस्नान मूलगुण कहलाता है।

प्र.1302 क्षिति (भूमि) शयन मूलगुण का पालन किस तरह किया जाता है?

उत्तर पृथ्वी पर एवं तृण, फलक (पाटे), पाषाण-शिला आदि पर शयन रूप क्षिति शयन मूलगुण का पालन किया जाता है।

प्र.1303 स्थाण्डिलशायी गुण किसे कहते हैं?

उत्तर खुले आकाश (स्थान) पर सोने रूप स्थाण्डिलशायी गुण कहलाता है।

प्र.1304 अदन्तधावन गुण किसे कहते हैं?

उत्तर दन्त घर्षण नहीं करना अदन्त घर्षण है अर्थात् तांबूल, दन्तकाष्ठ (दातोन) आदि का त्याग करना अदन्तधावन मूलगुण है।

प्र.1305 स्थिति भोजन कैसे किया जाता है?

उत्तर पैरों में चार अंगुल अन्तराल से खड़े होकर भोजन करना स्थितिभोजन कहलाता है।

प्र.1306 स्थिति भोजन मूलगुण से जीवन के अंत में कौन-सा शुभ संकेत प्राप्त होता है?

उत्तर स्थिति भोजन से जब पैरों की शक्ति कमजोर होने लग जाती है तब सल्लेखना विधि प्रारम्भ करने की शिक्षा मिलती है क्योंकि मुनि का भोजन (आहार) कदापि बैठकर या लेटकर नहीं हुआ करता है।

प्र.1307 एकभक्त मूलगुण का अर्थ क्या है?

उत्तर सूर्य प्रकाश से आलोकित-दिन में एक ही बार आहार (खाद्य, स्वाद्य, लेह्य और पेय) का ग्रहण करना एक भक्त मूलगुण कहलाता है।

प्र.1308 आचार ग्रन्थ रचना रूप प्रवृत्ति कितने प्रकार से की जाती है?

उत्तर आचार ग्रन्थ (जिसमें मूलगुणादिक वर्णन हो ऐसा मूलाचार) की रचना रूप प्रवृत्ति तीन प्रकार से होती है- उद्देश्य, लक्षण और परीक्षा।

१. नाम रूप से मूलगुणों का कथन करना उद्देश्य कहलाता है।

२. कथित पदार्थों के स्वरूप की व्यवस्था करने वाला धर्म लक्षण कहलाता है।

३. जिनका लक्षण किया गया है ऐसे पदार्थों का जैसा- का तैसा लक्षण है या नहीं, इस प्रकार से प्रमाणों के द्वारा अर्थ का निर्णय (निश्चय) करना परीक्षा कहलाता है।

प्र.1309 ग्रन्थ व्याख्या के तीन प्रकार कौन-से हैं?

उत्तर ग्रन्थ व्याख्या संग्रह, विभाग और विस्तार रूप से तीन प्रकार की मानी गई है। जिसे सूत्र, वृत्ति और वार्तिक स्वरूप से अथवा सूत्र, प्रतिसूत्र और विभाषा सूत्र के स्वरूप से भी व्याख्यायित किया जाता है।

प्र.1310 हिंसा का लक्षण क्या है?

उत्तर प्रमत्त-योग से प्राणों का व्यपरोपण-वियोग करना हिंसा है।

प्र.1311 प्रमत्त-योग किसे कहते हैं?

उत्तर कषाय सहित अवस्था को प्रमाद कहते हैं। (कषाय वह जो बुद्धिपूर्वक या अबुद्धि पूर्वक अथवा व्यक्ताव्यक्त रूप निद्रादिक के समय में भी होती हो उसे प्रमाद में ग्रहण किया जा सकता है।)

प्र.1312 अहिंसा महाव्रत का लक्षण क्या है?

उत्तर प्रमत्त योग से होने वाली हिंसा का त्रियोग से परिहार करना- सभी जीवों के ऊपर दया करना या दया का होना अहिंसा महाव्रत है।

प्र.1313 असत्य का लक्षण क्या है?

उत्तर जो सत् अर्थात् प्रशस्त रूप नहीं है वे अप्रशस्त कथन असत् या प्राणी पीड़ा जनक अनृत वचन असत्य कहलाता है।

प्र.1314 सत्य महाव्रत का लक्षण क्या है?

उत्तर सत् शब्द प्रशंसावाची है प्रशस्त शब्द सत् का पर्यायवाची है। ऋत सत्य को कहते हैं। जो ऋत नहीं वह अनृत है और जो पीड़ा जनक होने से अप्रशस्त हैं। वे चाहे विद्यमान अर्थ विषयक हों चाहे अविद्यमान अर्थ विषयक हों, अप्रशस्त ही कहे जाते हैं। ऐसे असत्य वचनों का त्रियोग से त्याग करना ही सत्य महाव्रत है।

प्र.1315 चौर्य या स्तेय का लक्षण क्या है?

उत्तर गिरी हुई, भूली हुई, रखी हुई और बिना पूछे ग्रहण की हुई वस्तु अदत्त शब्द से कही जाती है, ऐसी अदत्त का आदान अदत्तादान अर्थात् चोरी कहलाता है।

प्र.1316 अचौर्य महाव्रत का लक्षण क्या है?

उत्तर सचित्ताचित्त सूक्ष्मादिक या उपकरणादिक अदत्त वस्तु के ग्रहण का त्रियोगपूर्वक त्याग अचौर्य महाव्रत कहलाता है।

प्र.1317 अब्रह्म या मैथुन का लक्षण क्या है?

उत्तर चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से राग परिणाम आविष्ट हुए स्त्री और पुरुष का परस्पर में स्पर्श के प्रति जो इच्छा है उसका नाम मिथुन और मिथुन की क्रिया को मैथुन अब्रह्म कहते हैं।

प्र.1318 ब्रह्मचर्य महाव्रत का लक्षण क्या है?

उत्तर ब्रह्म शब्द का अर्थ जीव होता है। उस आत्मवान्-जितेन्द्रिय जीव का चेतनाचेतन-सचित्ताचित्त स्त्री संभोग के त्रियोग से अभाव रूप वृत्ति का नाम चर्या है। इस प्रकार की चर्या जो मैथुन का त्याग करना है वह ब्रह्मचर्य महाव्रत कहलाता है।

प्र.1319 परिग्रह का लक्षण क्या है?

उत्तर सर्व ओर से पर पदार्थ में आसक्ति का नाम परिग्रह है। वह मूलरूप से बाह्य और अभ्यन्तर के भेद से दो प्रकार का है। उनमें बाह्य परिग्रह के दस भेद एवं अभ्यन्तर परिग्रह के चौदह भेद होते हैं।

बाह्य परिग्रह- क्षेत्र, वास्तु, हिरण्य(चाँदी) सुवर्ण, धन, धान्य, दासी, दास, कुप्य (वस्त्र) और भाण्ड (बर्तन)।

अभ्यन्तर- मिथ्यात्व, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद,

पुंवेद और नपुंसकवेद।

प्र.1320 अपरिग्रह महाव्रत का लक्षण क्या है?

उत्तर बाह्य और अभ्यन्तर परिग्रह की विमुक्ति-त्याग करना संग-विमुक्ति है। अर्थात् श्रमण के अयोग्य सर्ववस्तु का त्याग करना और त्रियोग से परिग्रह में आसक्ति का अभाव होना परिग्रह त्याग रूप अपरिग्रह महाव्रत कहलाता है। (समिति आदि वर्णन देखिये जैनागम संस्कार, अ.11)

प्र.1321 सदाचार-प्रवृत्ति वाले आचार्य के वचन स्खलन में दोष का अभाव मानने पर क्या असत्य कहलता है?

उत्तर सदाचारी आचार्य के द्वारा अन्यथा अर्थ कर देने पर भी दोष नहीं है अर्थात् यदि आचार्य सदाचार प्रवृत्ति वाले पाप भीरु हैं और कदाचित् अर्थ का वर्णन करते समय कुछ अन्यथा बोल जाते हैं या उनके वचन स्खलित हो जाते हैं तो उसे दोष रूप नहीं समझना चाहिए। अथवा आचार्यादि के वचन स्खलन में दोष को छोड़ कर अर्थात् दोष को न ग्रहण करके जो वचन बोलना है वह सत्यव्रत है। (मूलाचार गा.६, टीका-पृष्ठ १३)

प्र.1322 जीव निबद्ध, जीव अप्रतिबद्ध और जीव सम्भव परिग्रह कौन-से कहलाते हैं?

उत्तर 1. मिथ्यात्व, वेद, राग, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, क्रोध, मान, माया और लोभ आदि अथवा दासी, दास, गो, अश्व आदि ये जीव निबद्ध अर्थात् जीव आश्रित परिग्रह हैं।

2. जीव से पृथग्भूत क्षेत्र, वास्तु, धन, धान्य आदि जीव से अप्रतिबद्ध, जीव से अनाश्रित, परिग्रह हैं।

3. जीवों से उत्पत्ति है जिनकी ऐसे मोती, शंख, सीप, चर्म, दाँत, कम्बल आदि अथवा श्रमणपने के अयोग्य क्रोध आदि परिग्रह जीव सम्भव परिग्रह कहलाते हैं।

प्र.1323 ईर्या समिति के अन्तर्गत जो मुनियों के गमन हेतु दिवस में प्रासुक मार्ग से गमन करना कहा गया है वहाँ प्रासुक मार्ग का अर्थ क्या है?

उत्तर 'प्रगता असवो यस्मिन्'- निकल गये हैं प्राणी जिसमें से उसे प्रासुक कहते हैं। ऐसा प्रासुक-निरवद्यमार्ग है। उस प्रासुक मार्ग से अर्थात् हाथी, गधा, ऊँट, गाय, भैंस और मनुष्यों के समुदाय (या वाहनादि) के गमन से उपमर्दित हुआ जो मार्ग है वह प्रासुक मार्ग कहलाता है।

प्र.1324 मुनि रूप के चार चिह्न (लिंग) कौन-से माने गये हैं?

उत्तर मुनि रूप के आचेलक्य (निर्वस्त्रता), केशलोंच, पिच्छिका ग्रहण और शरीर संस्कार रहितपना ये चार चिह्न (लिंग) होते हैं।

प्र.1325 जैन साधु, साध्वी स्व हस्त से केशलोंच क्यों करते हैं?

उत्तर जैन साधु, साध्वी दीनवृत्ति को दूर करने एवं स्वाभिमान और स्वावलम्बन पूर्ण जीवन जीने हेतु स्वहस्त से केशलोंच करते हैं तथा ऐसा करना निर्ममता (वैराग्य) का प्रतीक है।

प्र.1326 स्थिति भोजन मूलगुण में साधु किस तरह खड़े होकर आहार ग्रहण करते हैं?

उत्तर दीवाल आदि का सहारा न लेकर जीव-जन्तु से रहित तीन स्थान की भूमि में समान पैर रखकर खड़े होकर दोनों हाथ की अंजुली बनाकर भोजन (आहार) करना स्थिति भोजन कहलाता है।

प्र.1327 स्थिति भोजन में दीवाल आदि का सहारा न लेने से तात्पर्य क्या है?

उत्तर स्थिति भोजन में दीवाल का भाग या खंभे आदि का सहारा न लेकर, पैरों में चार अंगुल प्रमाण का अन्तर रखकर खड़े होकर आहार लेते हैं, साधु न बैठकर आहार ले सकते हैं न लेटकर और न तिरछे आदि स्थित होकर आहार ले सकते हैं।

प्र.1328 साधु खड़े होकर अंजुली में आहार लेते हैं, इसका तात्पर्य क्या है?

उत्तर साधु खड़े होकर अंजुली-पुट में अर्थात् पाणिपुट या पाणी-पात्री अथवा कर-पात्र में आहार ग्रहण करते हैं।

प्र.1329 साधु तीन स्थान की भूमि देखकर आहार ग्रहण करते हैं, इसका अर्थ क्या है?

उत्तर साधु; आहार के समय अपने पैर रखने के स्थान को, उच्छिष्ट (जूठन) गिरने के स्थान को और परोसने वाले (आहार देने वाले दाता) के स्थान को जीवों के गमनागमन या वध आदि से रहित-विशुद्ध देखकर आहार ग्रहण करते हैं।

प्र.1330 साधु किस उद्देश्य से स्थिति भोजन का अनुष्ठान करते हैं?

उत्तर साधु यह विचार करते हैं कि जब तक मेरे हाथ पैर चलते हैं तब तक ही आहार ग्रहण करना योग्य है अन्यथा नहीं; ऐसा सूचित होते ही कि मेरा शरीर अब स्थिति भोजन करने में अशक्त हो रहा है तब वे सल्लेखना की साधना का उपक्रम प्रारम्भ कर दिया करते हैं। तथाहि वे साधु बैठकर दोनों हाथों से या बर्तन में लेकर के या अन्य के हाथ से मैं भोजन नहीं करूँगा ऐसी प्रतिज्ञा के निर्वहन के लिए खड़े होकर आहार ग्रहण करते हैं।

प्र.1331 साधु के आहार हेतु पाणिपात्र ही क्यों योग्य है बर्तन योग्य क्यों नहीं?

उत्तर साधु विचार करते हैं कि बर्तन रखने और शुद्ध करने की अपेक्षा अपना हस्त रूपी पाणिपात्र ही शुद्ध रहता है तथा अंतराय हो जाने पर पूरी भोजन से भरी हुई थाली को छोड़ना नहीं पड़ता है अन्यथा थाली में खाते समय अंतराय हो जाने पर पूरी भोजन से भरी हुई थाली को छोड़ना पड़ेगा, इसमें दोष लगेगा। तथा इन्द्रिय संयम और प्राणी संयम का परिपालन करने के लिए भी साधु स्थिति भोजन के साथ पाणी पात्री हुआ करते हैं।

प्र.1332 एक भक्त (एकाशन) मूलगुण का पालन साधु किस तरह किया करते हैं?

उत्तर सम्पूर्ण अहोरात्र में दिन की दो बेलाओं में से किसी एक बेला में सूर्य उदय और अस्त के काल में से तीन-तीन घड़ी से रहित मध्य काल में एक, दो अथवा तीन मुहूर्त्तकाल तक आहार ग्रहण करना साधु का एक भक्त मूलगुण कहलाता है।

प्र.1333 एक भक्त मूलगुण में सूर्योदय और सूर्यास्त के काल में तीन-तीन घड़ी से रहित मध्यकाल ऐसा

क्यों कहा है?

उत्तर प्रात:कालीन तीन घड़ी (घटिकाएँ) काल छोड़कर आहार ग्रहण करने में कुछ आवश्यक अभिप्राय रूप बिन्दु विचारणीय जानना चाहिए-

(1) रात्रिकालीन जीवों की उत्पत्ति वातावरण पूर्ण रूपेण रुक जाती है।

(2) मुनियों की आवश्यक क्रियायें सम्पूर्ण हो जाती है।

(3) मुनिगण निहार इत्यादिक क्रियाओं से निवृत्त हो जाते हैं।

(4) श्रावकगण जिनेन्द्र प्रभु की भक्ति आदि क्रियाओं से निवृत्त हो जाते हैं।

(5) श्रावकों द्वारा की जाने वाली रसोई से संबन्धी क्रिया पूर्ण हो जाती है इसी तरह सायंकाल में रात्रि कालीन तीन घड़ी पूर्व चर्या पूर्ण करने का अभिप्राय यह होता है कि-

1. तीन घड़ी पूर्व से ही वातावरण में रात्रिकालीन जीवों की उत्पत्ति आरम्भ हो जाती है।
2. मुनिवर चर्या उपरान्त स्व गन्तव्य स्थल तक पहुँच सकते हैं।
3. मुनिवर प्रतिक्रमण आदिक आवश्यक क्रियायें समय पूर्वक पूर्ण कर सकते हैं।
4. श्रावकगण भी अपनी आवश्यक क्रियायें समय पूर्वक सम्पूर्ण कर सकते हैं ।इत्यादि।

प्र.1334 मुनिराज एक, दो अथवा तीन मुहूर्त्त तक आहार ग्रहण करते हैं इसका तात्पर्य क्या है?

उत्तर मुनिराज के लिए स्वशक्ति- बल, क्षुधा और स्वास्थ इत्यादि की अनुकूलता एवं प्रतिकूलता को ध्यान में रखते हुये यह एक, दो अथवा तीन मुहूर्त्त तक का काल आहार ग्रहण के योग्य बतलाया गया है।

प्र.1335 यह आहार ग्रहण का काल आहारचर्या को निकलने से लेकर ग्रहण किया गया है अथवा आहार को प्रारंभ करने से लेकर ग्रहण किया गया है?

उत्तर यह काल का परिमाण सिद्ध भक्ति करने के अनन्तर आहार ग्रहण करने का है। न कि आहार के लिये भ्रमण करते हुये विधि न मिलने के पहले का भी। अर्थात् यदि साधु आहार हेतु भ्रमण कर रहे हैं, उस समय का काल इसमें शामिल नहीं है।

प्र.1336 साधु को जो श्रावक उच्चासन के रूप में काष्ठ का आसन प्रदान करता है और साधु उस आसन को इस प्रकार मानकर कि यह काष्ठ का आसन इतना ऊँचा है; जिस पर से कोई मूषक (चूहा) आदि जन्तु भी छलांग लगाकर लाँघ सकते हैं तथा इस आसन के ऊपर खड़े होकर मुझे आहार लेने से कोई चींटी आदि जीवों से कोई अधिक बाधा या हिंसादि दोष की बाधा तथा शीतादिक की बाधा भी नहीं होगी इसलिए वे साधु उस आसन पर खड़े होकर आहार ग्रहण कर सकते हैं, तो क्या दोष है?

उत्तर ऐसा करने में कोई दोष नहीं है। अर्थात् काष्ठ के आसन पर खड़े होकर आहार ग्रहण कर सकते हैं। और जो वर्तमान में प्रचलन में भी है।

प्र.1337 नियुक्त तप और गुप्तियाँ मूलगुणों में किस तरह गर्भित हैं?

उत्तर मुनियों के द्वारा नित्य पालन किये जाने वाले षडावश्यकों में जो सामायिक तथा कायोत्सर्ग रूप कृति-कर्मों में समता पूर्वक कायक्लेश, व्युत्सर्ग आदि किये जाते हैं उनमें ध्यान रूप मन, वचन और काय की स्थिरतामय गुप्तियाँ भी देखी जाती है अत: मूलगुणों में इनका पालन होना संभव है।

प्र.1338 नैमित्तिक रूप से तप और गुप्तियाँ उत्तर गुणों में किस तरह गर्भित होते हैं?

उत्तर यदा-कदा नैमित्तक रूप से होने वाले उपवास और योगधारणादिक उत्तर गुणों में तप और गुप्तियों का अनुपालन होना बन जाता है। अत: नैमित्तिक रूप से तप और गुप्तियाँ उत्तर गुणों में गर्भित होना संभव है।

प्र.1339 यतियों के (मुनियों के) जीवन में होने वाले छ: काल कौन से हैं?

उत्तर यतियों के जीवन के छ: काल-१. दीक्षा काल २. शिक्षा काल ३. गणपोषण काल ४. आत्मसंस्कार काल ५. सल्लेखना काल और ६. उत्तमार्थ काल होते हैं।

प्र.1340 यतियों का दीक्षा काल किस तरह का होता है?

उत्तर जब कोई आसन्न भव्य जीव-भेदाभेद रत्नत्रयात्मक निर्ग्रंथ आचार्य को प्राप्त करके आत्माराधना के अर्थ या प्रयोजन से बाह्यभ्यंतर परिग्रह का त्याग कर निर्ग्रंथ दीक्षा ग्रहण करता है, वह मुनि का दीक्षा काल है।

प्र.1341 यतियों का शिक्षा काल किस तरह का होता है?

उत्तर दीक्षा के अनन्तर निश्चय व्यवहार रत्नत्रय तथा परमात्म तत्त्व के परिज्ञान के लिये उसके प्रतिपादक अध्यात्म और आचार शास्त्रों की शिक्षा ग्रहण करना शिक्षा काल है।

प्र.1342 यतियों का गणपोषण काल किस तरह का होता है?

उत्तर शिक्षा के पश्चात् निश्चय-व्यवहार मोक्षमार्ग में स्थित होकर उसके जिज्ञासु भव्य प्राणी गणों को परमात्मोपदेश से पोषण करना गणपोषण काल है।

प्र.1343 यतियों का आत्मसंस्कार काल किस तरह का होता है?

उत्तर गणपोषण के अनंतर गण (स्वसंघ) को छोड़कर जब निज परमात्मा में शुद्ध संस्कार किया जाता है तब आत्मसंस्कार काल कहलाता है।

प्र.1344 यतियों का सल्लेखना काल किस तरह का होता है ?

उत्तर तदनन्तर उसी आत्मसंस्कार के हेतु परमात्म पदार्थ में स्थित होकर रागादि विकल्पों के कृश करने रूप भाव-सल्लेखना तथा उसी के प्रयोजनार्थ कायक्लेश आदि के अनुष्ठान रूप द्रव्य-सल्लेखना है। और इन दोनों का आचरण करना सल्लेखना काल कहलाता है।

प्र.1345 यतियों का उत्तमार्थ काल किस तरह का होता है?

उत्तर सल्लेखना के पश्चात् बहिर् द्रव्यों में इच्छा का निरोध है लक्षण जिसका, ऐसे तपश्चरण रूप (ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप रूप) निश्चय चतुर्विधाराधना; जो कि तद्भव मोक्षगामी ऐसे चरम देह अथवा

उससे विपरीत जो भवान्तर से मोक्ष जाने के योग्य हैं इन दोनों के होती हैं, वह उत्तमार्थ काल कहलाता है।

प्र.1346 मुनियों के द्वारा त्याज्य सप्तभय कौन से हैं?

उत्तर मुनियों के द्वारा त्याज्य इह-लोक, पर-लोक, अत्राण, अगुप्ति, मरण, वेदना और आकस्मिक नामक सप्त भय हैं।

प्र.1347 इह-लोक भय किसे कहते हैं?

उत्तर इस लोक में शत्रु, विष, कण्टक आदि से भयभीत होना इहलोक भय है।

प्र.1348 पर-लोक भय किसे कहते हैं?

उत्तर अगले भव में कौन-सी गति मिलेगी? वहाँ क्या होगा ? इत्यादि सोचकर भयभीत होना, परलोक भय है।

प्र.1349 अत्राण मद किसे कहते हैं ?

उत्तर मेरा कोई रक्षक नहीं है, ऐसा डर पैदा होना अत्राण भय है।

प्र.1350 अगुप्ति भय किसे कहते हैं?

उत्तर इस क्षेत्र या ग्राम आदि में परकोटे आदि साधन नहीं हैं, अतः शत्रु आदि से कैसे मेरी रक्षा होगी ऐसी चिंतवन करना अगुप्ति भय है।

प्र.1351 मरण भय किसे कहते हैं?

उत्तर मृत्यु से भयभीत होना, मरण भय कहलाता है।

प्र.1352 वेदना भय किसे कहते हैं?

उत्तर रोग आदिक से उत्पन्न होने वाली पीड़ा से डरना, वेदना भय है।

प्र.1353 आकस्मिक भय किसे कहते हैं?

उत्तर अकस्मात मेघ गर्जना, विद्युतपात आदि से डरना, आकस्मिक भय है।

प्र.1354 मुनियों के द्वारा त्याज्य अष्ट मद कौन-से हैं?

उत्तर विज्ञान मद, ऐश्वर्य मद, आज्ञा मद, कुल मद, बल मद, जाति मद, तपो मद और रूप मद इस तरह मुनियों के द्वारा त्याज्य अष्ट मद (गर्व) हैं।

प्र.1355 विज्ञान मद किसे कहते हैं?

उत्तर अक्षर ज्ञान और संगीत आदि के ज्ञान का गर्वित होना, विज्ञान मद है।

प्र.1356 ऐश्वर्य मद किसे कहते हैं?

उत्तर द्रव्यादि सम्पत्ति के वैभव से गर्वित होना, ऐश्वर्य मद है।

प्र.1357 आज्ञा मद किसे कहते हैं?

उत्तर अपने द्वारा दिए गये आदेश का उलंघन न होने रूप गर्व का होना आज्ञा मद है।

प्र.1358 कुल मद किसे कहते हैं?

उत्तर पिता के वंश परंपरा की शुद्धि का अथवा इक्ष्वाकु वंश, हरिवंश आदि में जन्म लेने रूप गर्व का होना, कुल मद कहलाता है।

प्र.1359 बल मद किसे कहते हैं ?

उत्तर शरीर, आहार आदि से उत्पन्न हुई शक्ति से गर्वित होना बल मद है।

प्र.1360 जाति मद किसे कहते हैं?

उत्तर माता के वंश परंपरा की शुद्धि से गर्वित होना जाति मद कहलाता है।

प्र.1361 तपो मद किसे कहते हैं?

उत्तर शरीर के संतापित रूप गर्वित होना तपो मद है।

प्र.1362 रूप मद किसे कहते हैं?

उत्तर समचतुरस्र संस्थान, गौर आदि वर्ण, सुन्दर कांति और यौवन से उत्पन्न हुई रमणीयता से गर्वित होना रूप मद है।

प्र.1363 यतियों के द्वारा त्याज्य चार संज्ञायें कौन-सी हैं?

उत्तर यतियों के द्वारा त्याज्य आहार, भय, मैथुन और परिग्रह रूप चार संज्ञायें होती हैं।

प्र.1364 आहार संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर आहार को देखने से अथवा उसकी तरफ उपयोग लगाने से जो उदर के खाली रहने से तथा असातावेदनीय की उदय और उदीरणा के होने पर जीव के नियम से आहार संज्ञा होती है।

प्र.1365 भय संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर अत्यन्त भयंकर पदार्थ के देखने से, पहले देखे हुए भयंकर पर्याय के स्मरण से अथवा अधिक निर्बल होने पर अन्तरंग में भयकर्म की उदय-उदीरणा होने पर इन चार कारणों से भय संज्ञा होती है।

प्र.1366 मैथुन संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर स्वादिष्ट और गरिष्ठ रस युक्त भोजन करने से इधर-उधर उपयोग लगाने से तथा कुशील आदि सेवन करने से और वेदकर्म की उदय उदीरणा होने से- इन चार कारणों से मैथुन संज्ञा उत्पन्न होती है।

प्र.1367 परिग्रह संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर इत्र, भोजन, उत्तम स्त्री आदि भोगोपभोग के साधनभूत पदार्थ के देखने से अथवा पहले भुक्त पदार्थों का स्मरण करने से और ममत्व परिणामों के होने से तथा लोभकर्म की उदय-उदीरणा होने से परिग्रह संज्ञा होती है।

प्र.1368 यतियों के द्वारा त्याज्य तीन गारव (गौरव) कौन-से हैं?

उत्तर यतियों के द्वारा त्याज्य ऋद्धि गारव, रस गारव, साता गारव ये तीन गारव हैं।

प्र.1369 ऋद्धि गारव किसे कहते हैं?

उत्तर मेरे शिष्य आदि बहुत हैं, दूसरे यतियों के पास नहीं हैं, ऐसा अभिमान होना ऋद्धि गारव कहलाता है।

प्र.1370 रस गारव किसे कहते हैं?

उत्तर मुझे आहार में रसयुक्त पदार्थ सहज ही उपलब्ध है, ऐसा अभिमान होना रस गारव कहलाता है।

प्र.1371 साता गारव किसे कहते हैं?

उत्तर मैं यति होकर भी इन्द्रत्वसुख, चक्रवर्तीसुख अथवा तीर्थंकर जैसे सुख का उपभोग ले रहा हूँ, ये दीन याति सुखों से रहित हैं, इत्यादि रूप से अभिमान करना साता गारव कहलाता है।

प्र.1372 असादना किसे कहते हैं? और यतियों द्वारा त्याज्य असादना कौन-सी हैं?

उत्तर अस्तिकाय पाँच ही हैं, जीव निकाय छह हैं, महाव्रत पाँच हैं और प्रवचन मातृका आठ और नवपदार्थ- ये तेतीस ही यहाँ तेतीस असादना नाम से कहे गए हैं। अर्थात् इनकी विराधना या अनादर ही असादना कहलाती है।

प्र.1373 अस्तिकाय की असादना किस रूप होती है?

उत्तर अस्ति-विद्यामान है काय निचय अर्थात् प्रदेशों का समूह जिसमें वह अस्तिकाय है। वे पाँच हैं- जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश। (काल में प्रदेशों का प्रचय न होने से वह अस्ति मात्र है, आस्तिकाय नहीं है।) इनका अनादर या विराधना करना अस्तिकाय की असादना है।

प्र.1374 षट्काय जीवों की असादना किस रूप होती है?

उत्तर पृथ्वी कायिक आदि छह जीव निकाय की विराधना या अनादर करना षट्काय जीवों की असादना है।

प्र.1375 महाव्रत की असादना किस रूप होती है?

उत्तर अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह रूप जो महाव्रत हैं, उनकी विराधना या अनादर करना महाव्रत की असादना है।

प्र.1376 प्रवचन-मातृका की असादना किस रूप होती है?

उत्तर पाँच समिति और तीन गुप्ति इन आठ प्रवचन मातृका का अनादर या विराधना करना प्रवचन मातृका की असादना है।

प्र.1377 नव-पदार्थ की असादना किस रूप होती है?

उत्तर जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य और पाप इनका अनादर या विराधना करना नव-पदार्थ की असादना है।

प्र.1378 कोई भव्य साधु आत्मसंस्कार काल से लेकर सन्यास (सल्लेखना) काल तक की आलोचना गुरु के पास किस भाव से प्रकट करता है?

उत्तर जो अपने में स्वयं की प्रकट करने योग्य दोष हैं उनकी मैं स्वयं निन्दा करता हूँ, जो पर के समक्ष कहने योग्य दोष है उनको मैं आचार्य आदि के सामने प्रकट करते हुये अपनी गर्हा करता हूँ और मैं चारित्राचार की आलोचनापूर्वक सम्पूर्ण बाह्य अभ्यन्तर उपधि की आलोचना करता हूँ अर्थात् सम्पूर्ण

उपधि को अपने से दूर करता हूँ। तात्पर्य यह हुआ कि जो उपधि और परिग्रह निन्दा करने योग्य है उनकी मैं निन्दा करता हूँ, जो गर्हा करने योग्य हैं उनकी गर्हा करता हूँ और समस्त बाह्य अभ्यन्तर की उपधि की आलोचना करके अपने से दूर करता हूँ। इस प्रकार वे भव्य साधु आत्मसंस्कार काल से लेकर सन्यास काल तक की आलोचना गुरु के पास प्रकट करते हैं।

प्र.1379 यतिलोग जिन निर्यापक के पास आलोचना प्रकट करते हैं वे कैसे आचार्यों के गुणों से समन्वित होते हैं?

उत्तर जो ज्ञान, दर्शन, तप और चारित्र इन चारों में अविचल हैं, धीर हैं, आगम में निपुण हैं और रहस्य अर्थात् गुप्त दोषों को प्रकट नहीं करते हैं ऐसे गुणों से समन्वित आचार्य आलोचना सुनने के योग्य होते हैं।

प्र.1380 आलोचना के अनन्तर यति सल्लेखना के पूर्व किस तरह की क्षमा याचना प्रकट करते हैं?

उत्तर राग से अर्थात् माया, लोभ या स्नेह से; द्वेष से अर्थात् क्रोध से, मान से या अप्रीति से मैंने आपके प्रति जो अयोग्य कार्य किया है अथवा जो मैंने प्रमाद से जिसके प्रति कुछ भी वचन कहे हैं। उन सभी साधुजनों से मैं क्षमा माँगता हूँ अर्थात् उनको संतुष्ट करता हूँ। तात्पर्य, यह हुआ कि मैंने राग या द्वेषवश जो किंचित् भी अयोग्य अनुष्ठान किया है, उसके लिए और जिस किसी साधु को भी कहा है उन सभी से मैं क्षमा चाहता हूँ। इस तरह क्षमा-याचना प्रकट करते हैं।

किसी को भगवान नहीं बनाया जा सकता

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

जैन गुरुदेव आर्जवसागर जी ने आज अपने प्रवचन के दौरान कहा कि किसी को भगवान नहीं बनाया जा सकता है। देव, शास्त्र और गुरु तो केवल परमात्मा बनने का मार्ग दिखा सकते हैं, किसी को परमात्मा नहीं बना सकते। उन्होंने कहा कि कर्म एवं विकारों ने हमारे भगवत् स्वरूप को ढंक रखा है। परमात्मा बनने के लिए ध्यान एवं तप के द्वारा कर्म के आवरण को हटाने से आत्मा का परमात्म स्वभाव प्रकट हो जाता है। कोई शिल्पी कभी पाषाण से भगवान की मूरत नहीं बनाता बल्कि, उस शिल्पी के मस्तिष्क पटल पर जो भगवान की मूरत अंकित होती है उसे ध्याता हुआ उस पाषाण से अनावश्यक पत्थर को काटता चला जाता है और वह मूरत प्रगट हो जाती है वैसे ही साधक साधु अपनी आत्मा से परमात्मा प्रगट करने के लिए अनावश्यक रूप जो कर्म आत्मा से बंधे हैं उन्हें तपस्या के माध्यम से हटाता चला जाता है और एक दिन सम्पूर्ण कर्मों की निर्जरा होने के उपरान्त उस शुद्धात्मा से परमात्मा प्रगट हो जाता है। जो शरीर सहित होता है वह सकल परमात्मा है और शरीर रहित वह निकल परमात्मा होता है। ऐसे परमात्मापने की शक्ति धारण करने वाले हमारे आस-पास के लोगों को वात्सल्य देकर, स्नेह देकर उन्हें धर्म में आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करते रहना चाहिए। जो अपने आचरण में दोष लगा रहे हैं, उनकी निंदा न करके उन्हें एकांत में समझाकर, स्नेह देकर धर्म में स्थापित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि धर्मी से प्रेम करना ही धर्म से प्रेम करना है। सच्चा गुणवान वही है, जो गुणवानों से ईर्ष्या न करके प्रमोद भाव धारण करता है।

साभार: आर्जव-वाणी

सम्यग्ज्ञान-भूषण व सिद्धान्त-भूषण पदवी हेतु त्रैमासिक धार्मिक प्रश्न-पत्र

समय : 15 दिन   अंक : 100

❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं। ❖ सभी प्रश्नों के उत्तर लाइन वाले पेपर्स पर पेरा बनाकर लिखें। ❖ उत्तर राष्ट्र-भाषा हिन्दी में ही लिखें। ❖ उत्तर लिखकर काटे जाने या घिसे जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

प्र.1. आचरांग किन महानात्मा द्वारा उपदिष्ट है?

प्र. 2. आचारांग किन महान आत्मा द्वारा रचित है?

प्र. 3. किन विशेषताओं सहित आचारांग होता है?

प्र. 4. कौन-से प्रमुख अधिकारों से निबद्ध और अर्थों से गंभीर आचारांग है?

प्र. 5. चरणानुयोग का लक्षण जिनागम में किस रूप में कहा गया है?

प्र. 6. यम और नियम किसे कहते हैं?

प्र. 7. मुनि किन्हें कहते है?

प्र. 8. महाव्रत इतने महान क्यों कहलाते हैं?

प्र. 9. जैन साधु, साध्वी स्वहस्त से केशलोंच क्यों करते हैं?

प्र.10. मुनि रूप के चार चिह्न (लिंग) कौन-से माने गये हैं?

प्र.11. साधु तीन स्थान की भूमि देखकर आहार ग्रहण करते हैं, इसका अर्थ क्या है?

प्र.12. मुनिराज एक, दो अथवा तीन मुहूर्त्त तक आहार ग्रहण करते हैं इसका क्या तात्पर्य है?

प्र.13. यतियों के (मुनियों के) जीवन में होने वाले छः काल कौन-से हैं?

प्र.14. यतियों के द्वारा त्याज्य तीन गारव (गौरव) कौन से हैं?

प्र.15. प्रवचन मातृका की असादना किस रूप होती है?

प्र.16. यति लोग जिन निर्यापक के पास आलोचना प्रकट करते हैं वे कैसे आचार्यों के गुणों से समन्वित होते हैं?

प्र.17. आवश्यक का लक्षण क्या है?

प्र.18. अचेलकत्व की परिभाषा क्या है?

प्र.19. पाँच इन्द्रिय निरोध किस तरह घटित होता है?

प्र.20. स्थिति भोजन मूलगुण से जीवन के अंत सम्बन्धी कौन-सा संकेत प्राप्त होता है?

आधार :आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित-'**आगम-अनुयोग**', (प्रश्नोत्तर प्रदीप)

प्रश्न पत्र के पूर्व में दिये गये प्रश्नोत्तरों को पढ़कर उनका चिंतवन-मंथन कर उत्तर-पुस्तिका की पूर्ति करें।

परीक्षार्थी परिचय

नाम.. उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

पता ....

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु परीक्षार्थी के लिए नियमावली

1. उपर्युक्त पदवी हेतु परीक्षार्थी की उम्र कम-से-कम 13 वर्ष पूर्ण और अधिक-से-अधिक आंखों की दृष्टि और लेखनी के स्थिर रहने तक रहेगी।
2. परीक्षार्थी अवश्य रूप से सप्त-व्यसनों अथवा मद्य, मधु, मांस का त्यागी एवं तीर्थंकर व उनकी जिनवाणी का श्रद्धालु होना चाहिए।
3. जो महानुभाव भाव-विज्ञान पत्रिका के सदस्य हैं उन्हें परीक्षा सामग्री प्रश्नोत्तर रूप में भाव-विज्ञान पत्रिका के साथ संलग्न रूप से सतत रूप से चार वर्षों तक प्राप्त होती रहेगी।
4. चारों अनुयोगों के शास्त्रों सम्बन्धी क्रमश: प्राप्त होने वाले प्रश्नोत्तरों तथा अंत में दिये गये प्रश्न-पत्र को स्वयं पढ़कर हल करें और प्रेषित करें तथा अन्य जनों तक भी परीक्षा में भाग लेने की जानकारी अवश्य देने का पूर्ण प्रयास करें। (इस कार्य हेतु इंटरनेट का भी उपयोग कर सकते हैं।)
5. जो महानुभाव पत्रिका के सदस्य नहीं हैं उन्हें प्रश्नोत्तर रूप सामग्री प्राप्त करने हेतु डाक व्यय का भुगतान स्वत: करना होगा।
6. परीक्षार्थी के लिए यह आवश्यक होगा कि वे प्रश्नोत्तरी व प्रश्नपत्र पाते ही एक माह के अन्तर्गत साफ-सुथरे रजिस्टर के पेपर्स पर पूर्ण शुद्धता और विनयपूर्वक उत्तर लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजने का उपक्रम करें।
7. उत्तर पुस्तिका पर अंक (नम्बर) देने का भाव उत्तर-पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता और लिखावट आदि पर निर्भर करेगा।
8. परीक्षार्थी से ऑनलाइन या फोन द्वारा उत्तर पूछने की पहल भी की जा सकती है अत: अपने पते के साथ ई-मेल एड्रेस या मोबाईल/फोन नं. अवश्य लिखें।
9. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
10. परीक्षार्थी प्रश्नों के उत्तर स्वत: अपनी लिखावट में ही लिखें, अन्य किसी के नाम से उत्तर पुस्तिका भरकर प्रेषित किये जाने पर हमारे परीक्षा बोर्ड द्वारा उसे पदवी हेतु मान्य नहीं किया जावेगा।
11. कदाचित् किसी भव्य द्वारा किसी विशेष परिस्थिति में परीक्षा न दे सकने के कारण और उनके आग्रह किये जाने पर उन्हें प्रश्नोत्तरी व प्रश्नपत्र उपलब्ध कराये जाने की व्यवस्था परीक्षा-बोर्ड द्वारा की जा सकेगी।
12. सम्यग्ज्ञानभूषण एवं सिद्धांतभूषण पदवी सम्बन्धी उत्तीर्णता प्राप्त करने वाले भव्य गणों को भगवान महावीर आचरण संस्था समिति के द्वारा दो या चार वर्षों में प्रमाण पत्र सह सम्मानित किया जावेगा।
13. प्रश्नोत्तरी व प्रश्न-पत्र मंगवाने हेतु परीक्षा-बोर्ड के निम्न लिखित पदवीधारी से सम्पर्क करें:-

भाव-विज्ञान पत्रिका के	भ. महावीर आचरण संस्था	भ.महावीर आचरण संस्था
प्रधान सम्पादक	समिति के मंत्री	समिति के अध्यक्ष
डॉ. अजित जैन	श्री राजेन्द्र जैन	श्री महेन्द्र जैन
मो. 7222963457	मो. 7049004653	मो. 7999246837

14. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित करें:-
    सम्पादक, भाव-विज्ञान, एम आईजी-8/4, गीतांजली कॉम्पलैक्स,
    कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल 462003 (म.प्र.)

तीर्थोदय काव्य में षोडसभावनाओं का व्यावहारिकरूप

प्राचार्य डॉ. शीतलचन्द जैन, जयपुर

मोक्ष मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद् गुण लब्धये॥

पूज्य उमास्वामी महाराज ने तीर्थंकर के तीन विशेषण या गुण अविनाभाव के रूप में प्रतिपादित किये हैं क्योंकि ''तीर्थं करोति इति तीर्थंकर'' जो तीर्थ का प्रवर्तन करे सो तीर्थंकर है। तीर्थंकर और ईश्वर/भगवान में यही अन्तर है कि तीर्थंकर मोक्षमार्ग के नेता हैं और सभी भगवान मोक्षमार्ग के नेता नहीं हैं। अतः तीर्थंकर भगवान तो हैं परन्तु सभी भगवान तीर्थंकर नहीं हैं। इसलिये भगवान के साथ कर्मभूभेतृत्व और ज्ञातृत्व दो विशेषण अविनाभावी हैं परन्तु तीर्थंकर पद के साथ तीनों विशेषणों का अविनाभाव है।

पूज्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ने अपने इस काव्य का नाम तीर्थोदय नाम सार्थक रखा है क्योंकि तीर्थ के करने वाले तीर्थंकर कैसे बनते हैं उसके क्या उपाय हैं, इसका प्रमेय पूरे काव्य में हैं। मेरे आलेख का विषय तीर्थोदय काव्य में षोड्सभावनाओं का व्यावहारिक रूप प्रतिपादित किया गया है।

पूज्य आचार्यश्री ने लिखा है कि तीर्थंकर पद किसे मिलता है? इसका उत्तर तेरहवें काव्य में मुख्यतया व्यावहारिक रूप देखने को मिलता है-

कैसे निकलें भव-सागर से, दुखित हो रहे ये प्राणी।
दुःख छूटे व मोक्ष शीघ्र हो, ऐसा सोचे जो ज्ञानी॥
वही जगत् को सुखी चाहने-वाला जनउपकारी है।
उसे मिले वह तीर्थंकर पद, समवशरण-अधिकारी है॥

पूज्य आचार्यश्री का इस छन्द में व्यावहारिक पक्ष स्पष्ट है कि ऐसा ज्ञानी जो ऐसी सोच रखता है, दुःखी हो रहे प्राणी इस भवसागर के दुःखों से छूट कर मोक्ष को प्राप्त करें और संसार के प्राणी सुखी हों। ऐसी दूसरों के प्रति कल्याण की भावना रखने वाला जनोपकारी है। वही व्यक्ति तीर्थंकर पद प्राप्त कर समवसरण का अधिकारी है।

पूज्य आचार्यश्री ने इस छन्द में व्यावहारिक पक्ष प्रस्तुत किया है वही पक्ष पं.आशाधर जी ने अनगार धर्मामृत में लिखा है कि-

श्रेयोमार्गानभिज्ञानिह भवगहने जाज्वल्द्दुःखदाव-
स्कंधे चक्रभ्यमाणानति चकितमिमानुद्धरेयं वराकान्।
इत्यारोहितारानुग्रह रस विलसद्भावनोपात्रपुण्य
प्रक्रान्तरेव वाक्यैः शिवपथमुचितान् शास्ति योर्हन् स नव्यात्॥

इस संसार रूपी भीषण वन में दुःखरूपी दावानल अग्नि अतिशय रूप से जल रही है जिसमें श्रेयोमार्ग-अपने हित के मार्ग से अनभिज्ञ हुए ये बेचारे प्राणी झुलसते हुए अत्यन्त भयभीत होकर इधर-उधर

भटक रहे हैं। मैं इन बेचारों को इससे निकाल कर सुख में पहुँचा दूँ। पर के ऊपर अनुग्रह करने की इस बढ़ती हुई उत्कृष्ट भावना के इस विशेष से तीर्थंकर सदृश पुण्य संचित कर लेने दिव्य ध्वनिमय वचनों के तीर्थ द्वारा जो उसके योग्य मोक्षमार्ग का उपदेश देते हैं वे अर्हंत जिन हम लोगों की रक्षा करें।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि जो ज्ञानी सर्वतोमुखी, सर्वकल्याणमयी, सर्व के उपकार की भावना रखता है वहीं तीर्थंकर बन सकता है। तीर्थंकर बनने के उपाय में सोलह भावनायें निश्चयपरक के साथ व्यवहारिक भी हैं। सोलहभावनाओं में सर्वप्रथम दर्शनविशुद्धि भावना है जिसका व्यावहारिक रूप है कि जिसकी दृष्टि निर्मल हो, निर्मल दृष्टि का मतलब है कि आत्मा की सही समझ, भेदविज्ञान की उपलब्धि, स्व पर की पहचान, क्या हेय, क्या उपादेय, इस दृष्टि की जिसे उपलब्धि हो जाती है उसे कहते हैं कि सम्यग्दृष्टि इन सम्यग्दृष्टि में भी विरले जीव ऐसे होते हैं जो दर्शनविशुद्धि को प्राप्त करते हैं। दर्शनविशुद्धि प्राप्ति का मतलब है कि सम्पूर्ण लोक कल्याण की भावना से भरा हुआ सम्यग्दर्शन। सम्यग्दर्शन तो वैसे ही निर्मल है पर उस निर्मल सम्यग्दर्शन में एक विशेष प्रकार की विशुद्धि कब बढ़ेगी? तो वह विशुद्धि जब हमारे अन्दर विश्वकल्याण की प्रबल भावना, प्राणी मात्र के प्रति सेवा करुणा का भाव हो तभी विशुद्धि बढ़ती है। दर्शनविशुद्धि भावना में आठ अंग विश्व कल्याण के आठ मूल हैं। निःशंकित में जिसकी दृष्टि इतनी उदात्त हो चुकी है उसके मन में किसी के प्रति शंका, न ही किसी के प्रति सन्देह, तो भय कैसे होगा। इसी को निशंकित कहते हैं।

जिसके जीवन का एक ही लक्ष्य है सभी का कल्याण, सभी का भला हो और सबके भले में मेरा भला और जिसके अन्दर ऐसी भावना, वह अपने ही समान दूसरों को देखकर चलता, उसके अन्दर कोई भौतिक सांसारिक आकांक्षा नहीं होती इसी आकांक्षा के अभाव का नाम निकांक्षितपना है इसी प्रकार अन्य अंगों का भी व्यावहारिक रूप है। जीवन की खुशहाली के लिये विनय सम्पन्नता आवश्यक है। विनम्रता ही उन्नति का मूलाधार है। पूज्य आचार्यश्री ने उपचार विनय के तीन भेद करके व्यावहारिक रूप स्पष्ट किया है। आपने कायिक विनय के सम्बन्ध में एक छन्द दृष्टव्य है-

संग रहित निर्ग्रन्थ साधु को, देख खड़े हो जाना जो।
आगे जाकर आदर करना, हाथ जोड़ गुण गाना जो॥
कायिक सु-विनय रही सदा वह, वंदन पूजन आदिक जो।
राह चलें तब पीछे चलना, मिलें ज्ञान दर्शादिक वो॥

इस प्रकार आपने वाचिक एवं मानसिक विनय में भी व्यवहारिक रूप प्रस्तुत किया। पूज्य आचार्यश्री ने प्रत्येक भावना में अद्‌भुत व्यवहारिक रूप देने का प्रयत्न किया है क्योंकि तीर्थंकर प्रकृति ऐसे ज्ञानी जीव को ही बंधती है जिसमें जगत् कल्याण की भावना हो क्योंकि तीर्थंकरत्व का नेतृत्व गुण अवश्य होता है और नेतृत्व गुण तभी आता जब व्यक्ति में ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः'' की उक्ति चरितार्थ हो।

इस तीर्थोदय काव्य में पूज्य आचार्यश्री ने तीर्थंकर बनने में व्यक्ति का व्यावहारिक पक्ष क्या हो इसका अद्‌भुत सैद्धान्तिक व्यावहारिक रूप प्रस्तुत करके प्रत्येक प्राणी को उपयोगी बना दिया है।

81/94, नीलगिरि मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
मो. 9414783707

परिवर्तनमय संसार

पं. लालचन्द्र जैन 'राकेश'

ये दुनियां बदलती रही है हमेशा,
ये दुनियां हमेशा बदलती रहेगी।
कभी है उजेला, अंधेरा कभी है
कभी शाम है, तो सबेरा कभी है।
कभी सूर्य आता, तो जाता कभी है,
कभी चांद उगता, तो ढलता कभी है।
कि पूनम बदलती रही है हमेशा,
हमेशा अमावस बदलती रहेगी।
ये दुनिया बदलती रही है हमेशा।
कभी मुक्त मधुमास आते यहाँ हैं,
कभी दु:ख पतझड़ की चलती हवायें।
कभी सूखती भाग्य-सरिता की धारा,
कभी भाग्य सरिता उमड़ती यहाँ है।
यहाँ राह महलों की वन को हमेशा,
बदलती रही है, बदलती रहेगी।
ये दुनियां बदलती रही है हमेशा।
कभी जन्म-उत्सव मनाते यहाँ हैं,
कभी मौत की सहते रो-रो व्यथायें।
कभी भर के सिन्दूर सजती है दुल्हन,
तो दूल्हा चिता को सजाता यहाँ है।
कि जीवन की धारा सदा मोड़ अपने,
बदलती रही है, बदलती रहेगी।
ये दुनियां बदलती रही है हमेशा।

36, अमृत एन्क्लेव,
अयोध्या बायपास,
भोपाल (म.प्र.)
मो.9424410216

जैनधर्म की विशेषताएँ

-पं.नाथूलालजी जैन शास्त्री, इन्दौर

आत्मा, रुह, सोल या जीव के शत्रुओं को जीतने का मार्ग जैनधर्म है। आत्मा के शत्रु बाहरी नहीं, वरन् भीतर के अज्ञान, क्रोध-मान (द्वेष) एवं माया-लोभ (राग) हैं, जिन्हें जीतने वाले जिन हैं, उन्हें अपना आराध्य (देव) मानने वाला जैन कहलाता है। यह किसी देव विशेष का नाम नहीं है जैसे बुद्ध, ईसा, विष्णु आदि हैं। यह जिन शब्द व्यक्ति वाचक नहीं गुणवाचक है। णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायणं, णमो लोएसव्व साहूणं। इस णमोकार मंत्र में भी अरिहंत सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु इन पाँच परमपद में विराजमान परमेष्ठियों को नमस्कार किया है, जो गुणवाचक है।

जो रागद्वेषादि विकार सहित संसार से छूटने के लिए या इनसे मुक्त होने के लिए साधना करते हैं वे साधु हैं। वीतरागता के कथन करने वाले शास्त्रों का जो अध्ययन अध्यापन कराते हैं ऐसे उपाध्याय कहलाते हैं। जो दिगम्बर जैन मुनियों को दीक्षा प्रदान कर उन पर अनुशासन रखते हैं वे आचार्य हैं। ये तीनों ही दिगम्बर (भाव व द्रव्य से) होते हैं। दिगम्बर-अपरिग्रह को कहते हैं इसमें केवल वाहन वस्त्र त्याग ही नहीं है, किन्तु मिथ्यात्व, राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ, कषाय का त्याग भी शामिल है।

जो आत्मा के रागद्वेष के भेद रूप ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय, अंतराय इन चारों घातिया कर्मों को नाशकर सर्वज्ञ, वीतराग, हितोपदेशी परमात्मा (सशरीरी-सदेह) होते हैं वे अरिहंत हैं। ऊपर के चार कर्मों (विकारों) के सिवाय शेष बचे हुए वेदनीय, आयु, नाम, गोत्र इन अघाति चार कर्मों को नाश करते हैं वे सिद्ध या मुक्त परमात्मा कहलाते हैं।

इनमें जगत्कल्याण की भावना से जो तीर्थंकर नाम कर्म का बंध करते हैं। वे तीर्थंकर पद प्राप्त करते हैं। ऐसे यहाँ भरत एवं ऐरावत क्षेत्र में 24 तीर्थंकर होते हैं। विदेह क्षेत्र आदि में बीस व चौबीस आदि तीर्थंकर होते हैं।

1. प्रत्येक आत्मा अपनी भूल से अवनति और सच्चे परिश्रम से अपनी उन्नति कर सकता है वह स्वयं ही स्वर्ग, नरक या मुक्ति प्राप्त करता है, किसी ईश्वर पर वह निर्भर नहीं है। यह विश्व भी अनादि अनंत, प्रकृति निर्मित है, किसी ने इसकी रचना नहीं की है। आत्मा स्वयं ही पाप और पुण्य कर्म उपार्जन कर उसका कर्ता भोक्ता होता है। हम जैसे भोजन करते हैं, पानी पीते हैं, हवा लेते हैं, से सब चीजें देह में स्वभाव से रक्त, मांस या वीर्य बनाती हैं। हम उनका स्वयं भोग करते हैं।

2. जैनधर्म, परमात्मा, परलोक, पुण्य, पाप, स्वर्ग, नरक, आत्मा, ये सब मानता है अतः वह आस्तिक है, नास्तिक नहीं। परमात्मा की भक्ति पूजा, भक्त परमात्मा के गुण अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंत सुख अनंत वीर्य आदि की प्राप्ति हेतु करता है। परमात्मा से वह कुछ नहीं चाहता, न ही परमात्मा किसी को कुछ दे सकते हैं। वीतरागता की प्राप्ति वीतराग के आदर्श गुणों की भक्ति कर अपने पुरुषार्थ द्वारा होती है। ऐसे परमात्मा

अर्हन्त सिद्ध हैं, जिनके प्रत्यक्ष दर्शन नहीं होने से उनकी वीतराग मूर्ति द्वारा या मूर्ति के माध्यम से उनकी भक्ति की जाती है जिससे वैसा ही लाभ प्राप्त होता है।

3. जैनधर्म में अहिंसा की प्रधानता है जिसका स्वरूप इसी ग्रंथ में अहिंसावाद में देखना चाहिए 'स्वयं जियो और अपने समान दूसरों को जीने दो' इसी के अन्तर्गत है।

4. जैनधर्म का कर्म सिद्धांत अपूर्व है, जिसका वर्णन यहाँ कर्मवाद शीर्षक में आया है।

5. जैनधर्म का प्राण अनेकांत और स्याद्वाद (समन्वय) है, यह भी इसी ग्रंथ में विस्तार पूर्वक बताया गया है।

6. साम्यवाद- संसार के समस्त प्राणी एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक, देव, मुनष्य, तिर्यंच, नारकी सभी की आत्मा में परमात्मत्व शक्ति है। सभी आत्मा से परमात्मा बन सकते हैं। भगवान ऋषभदेव, भगवान महावीर आदि सभी तीर्थंकर पहले संसारी आत्मा थे, वे इस परमात्मात्व शक्ति को पहचान कर अपने पुरुषार्थ से नर से नारायण (परमात्मा) बने हैं। यह जैनधर्म की विशेष अन्यत्र नहीं है।

7. नयवाद- सम्यग्ज्ञान के प्रमाण (सकलादेश) और नय (विकलादेश) ये दो भेद हैं। इनमें पदार्थ के पूर्ण अंश को प्रमाण से और क्रमशः नय से जाना जाता है। सापेक्ष व्यवहार हम नय द्वारा ही करते हैं। इस सापेक्ष नय से विश्व के समस्त दर्शनों को, जो एक-एक नय के विषय हैं, समन्वय द्वारा अनेकांत में गर्भित करते हैं, जो विश्व मैत्री का सूचक है। यह अनेकांत-स्याद्वाद विषय में दर्शाया गया है।

8. कला के क्षेत्र में- जैनों द्वारा निर्मापित देश-विदेश में भव्य, मनोज्ञ एवं विशाल मंदिर तथा मानस्तंभ आदि स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला, के क्षेत्र में जैनधर्म का अपूर्व योगदान रहा है। श्रवणबेलगोला की गोम्मटश्वर मूर्ति, आबू के मंदिर, खजुराहो आदि प्रसिद्ध एवं अद्वितीय कृतियां सर्वविदित हैं। समवसरण, यक्ष-यक्षिणियों के अनुपम चित्र दर्शनीय हैं।

9. साहित्य के क्षेत्र में- जैन साहित्यकारों द्वारा प्राकृत (सौरसेनी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री) संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी में सहस्रों दर्शन, साहित्य, ज्योतिष, व्याकरण, गणित, नाटक, कथा, आचार एवं अध्यात्म विषयों पर ग्रंथ रचना की गई हैं। गुजराती, मराठी, तमिल, कन्नड़ आदि भाषाओं का विपुल साहित्य भी उपलब्ध है।

10. जैनधर्म जिसे श्रमण संस्कृति नाम प्राप्त है, उसके व्रत, सन्यास और समता ये तीन मूल तत्त्व हैं, जबकि वैदिक संस्कृति के यज्ञ, ऋण और वर्ण व्यवस्था ये तीन मूल तत्त्व हैं। इसका स्पष्टीकरण यह है कि श्रमण मोक्षतत्त्व मानते हैं, जिसका मूल व्रत और सन्यास है। समता का मूल आत्मवाद है। जैनधर्म-संस्कृति में कर्मवाद, संसार और मोक्ष की मान्यता है जबकि वैदिक में नहीं है। वैदिक संस्कृति में स्वर्ग की प्राप्ति के लिए यज्ञ, संतान उत्पन्नकर पितृ-ऋण (अपुत्रस्य गतिर्नस्ति) एवं वेदाध्ययन द्वारा ऋषि ऋण, समाज की संस्थापना तथा संघटना हेतु वर्ण व्यवस्था बतलाई है। इस प्रकार अलग होकर भी भारतीय संस्कृति में श्रमण और वैदिक दोनों संस्कृति शामिल हैं।

11. वैदिक आर्य कहलाते हैं किन्तु आर्य वास्तव में जैन ही हैं। क्योंकि जो अहिंसक है वह आर्य है जबकि जहाँ याज्ञिकी हिंसा की मान्यता है वहाँ आर्यत्व संभव नहीं।

न तेन आरियों होंति, येन पाणानि हिंसाति।
अहिंसा सव्वपाणानां, आरियोति पवुपिति॥

(धम्मपद-धम्म...वग्ग 15)

अर्थ- जहाँ प्राणों की हिंसा है वहाँ आर्यपना संभव नहीं। समस्त प्राणियों की प्राणरक्षा से आर्य सार्थक होती है।

12. जैनधर्म की साधना पद्धति में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र है जो मोक्षमार्ग है। जबकि सांख्य दर्शन में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, ये यह अष्टांग साधना पद्धति है। इन्हें जैनधर्म (ज्ञानार्णव- आचार्य शुभचन्द्र कृत) भी मानता है, परन्तु ये भौतिक पद्धति के अंतर्गत है। इनसे रागादि आत्मा के विकार नष्ट नहीं होते। बड़े-बड़े योगी अष्टांग योग साधन करते हुए भी क्रोधी एवं शीलरहित देखे गये हैं अत: उक्त अष्टांग योग के बाद ही आध्यात्मिक साधना का प्रारंभ होता है जो उक्त सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय रूप है। यहीं साधना का प्रारंभ होता है जो उक्त सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय रूप है। यही जैन योग है जिसमें उक्त अष्टांग योग का उपयोग सार्थक होता है।

दूसरों की सुख-शांति के लिए प्रयासरत रहें

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

विशेष प्रवचन में जैन आचार्यश्री आर्जवसागर जी ने कहा कि मनुष्यों को हमेशा दूसरों की सुख-शांति के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। ताकि सब जीव मिल-जुलकर इस संसार में शांतिपूर्वक रह सकें। आज के युग में आदमी को आत्मिक शान्ति मिलना ही दुर्लभ है। इसके बिना वह हमेशा परेशान रहता है। आज आदमी सामने वाले को सुखी देख, दु:खी हो जाता है।

जगत में दूसरों की उन्नति या अच्छाई न सहपाना यह मात्सर्य भाव कहलाता है। किसी का मकान इतना बड़ा क्यों? ऐसे ही किसी की दुकान और गाड़ी आदि को देख कर जब असहनीय प्रकृत्तियाँ व्यक्ति को अनावश्यक चिंताओं में उलझा देती हैं तब वे बेकार की चिंता चिताओं सम मानव के जीवन को ही जलाने लग जाती हैं, मुनिराज ने बकरी का उदाहरण देते हुए अपने विषय को और भी स्पष्ट किया कि एक राजा ने अपने नौकर से कहा कि मैं तुझे एक बकरी देता हूँ जिसे खिलाने पिलाने में कोई कसर मत करना लेकिन ध्यान रखना कि बकरी का वजन थोड़ा भी नहीं बढ़ना चाहिए। उस नौकर ने ऐसा ही किया सुबह से शाम तक खूब खिलाता और शाम को पिंजड़े में बन्द शेर का मुख दिखला देता। वह बकरी शेर की दहाड़ सुनते ही बड़ी चिंता से सूखकर पूर्ववत् हो जाती। कहने का अर्थ यह है कि मानव सब तरह के भोग-भोगकर भी बेकार की चिंताओं में उलझ जाता है वरन संतोष धारण कर ले तो स्वयं ही सुखी हो जाये।

साभार: आर्जव-वाणी

कोरोना काल में जैन दर्शन का महत्व

–इंजीनियर शोभित जैन, दमोह

प्रस्तावना :-

जैन धर्म विश्व के प्राचीनतम धर्मों तथा भारत की प्राचीन परम्पराओं से निकला एक धर्म है। कई हजार वर्ष पहले बने इस जैनधर्म के सिद्धांत सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के लिए आज भी उपयोगी हैं। यह धर्म के साथ संगीत व भाषा की अदभुत कला एवं संस्कृति के साथ जीने का दर्शन भी है और दर्शन के साथ अहिंसा धर्म का संगम है। सीधी सरल भाषा में यह खुला विश्व विद्यालय है जहाँ जीवन जीने का हर एक पहलू उपलब्ध है। जैन धर्म में यश वैभव और धनरूपी लक्ष्मी के बजाय वैराग्य रूपी लक्ष्मी को प्राथमिकता दी जाती है। यहां अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाने हेतु चिन्मय दीपक की उपादेयता निर्विवाद है। प्रवचन और उपदेश ही यहाँ आलोक पुंज हैं।

भगवान महावीर से लें संदेश :-

अनंत यातनाओं को सहन कर, मोक्ष प्राप्ति को उत्कृष्ट बताने वाले भगवान महावीर का संपूर्ण जीवन तप और ध्यान की पराकाष्ठा है अत: वह स्वयं ही प्रेरणादायी है। भगवान महावीर के उपदेशों को जानने समझने के लिए, विशेष प्रयास की जरूरत नहीं है। उनका दिव्य संदेश ''जियो और जीने दो'' ही अपने आप में सब कुछ कहता है।

कोरोना से क्षति :-

वर्ष 2020-21 कोरोना संकट के नाम समर्पित रहा। इसने भारत देश को ही नहीं, पूरे विश्व को प्रभावित किया है। जैन समाज भी इससे अछूता नहीं रहा। कोरोना ने सामाजिक और धार्मिक अनेक कार्यों को प्रभावित किया है। दिगम्बर जैन समाज ने अपने कुछ प्रभावक साधु और विद्वान खो दिए। भले ही इन सभी को कोरोना से न जोड़ा जाए लेकिन इस वर्ष के साथ उन आत्माओं को भी याद किया जाएगा।

''कोरोना केस गिनते-गिनते, पूरा साल बीत गया।
श्वासों की गगरी का, बहुत सा जल रीत गया॥''

कोरोना से सीखा :-

सभी को अपने कार्यों की समीक्षा करते रहना चाहिए।

''मृत्यु के दर पर आदमी खड़ा है, उसे मरने का डर सता रहा है।
छटपटा रहा है मृत्यु से बचने को, फिर भी लगा है विषय भोगने में॥''

== बस यही कारण है- संसार में भटकन का, मनमाने दुश्चिंतन का।

== अब भी वक्त है- बदल दे धारा, क्यों कर्मों से हारा।

** समीक्षा करने की जरूरत है,

हम जो कर रहे हैं-- उससे बेहतर कुछ और हो सकता है क्या?

जिसमें आरंभ कम से कम हो और किसी को कोई दिक्कत भी न हो।

** कोरोना ने हमें सिखाया कि-

1. जीवन क्षणभंगुर है, अनिश्चित है, धार्मिक मान्यताओं को लेकर विवाद करना उचित नहीं है।

2. संतवाद, पंथवाद, जातिवाद पर भी विराम होना चाहिए। सबको समतामय जीवन और सादगी की ओर बढ़ना चाहिए।

3. सर्वमान्य नेतृत्व के लिए विकल्प खोजने की जरूरत है, ताकि राष्ट्रीय स्तर की क्षमता पर कोई सवाल न उठाए।

** यह भी ध्यान में रखना होगा कि ऑनलाइन शांतिधारा, विधान के चक्कर में, प्रमादी बन, लोग भविष्य में मंदिर जाना न छोड़ दें।

कोरोना से बचने के उपाय : -

जैनधर्म में समस्याओं के समाधान हेतु जीवन स्पर्शी उपदेशः-

1. शाकाहारी चीजों का सेवन-

शाकाहारी, शुद्ध-विचार। जीते जग में, देवप्रकार॥ 6॥
अहिंसक-आहार, शाकाहार। देश की भाषा, सौम्य-विचार॥ 29॥
शाकाहारी, भोजन होता। शक्ति आये, भक्ति भी देता॥ 12॥
बाजार-निर्मित वस्तु जु खाते। बीमारी हो, मृत हो जाते॥ 18॥
शोधे बिन न खायें सभी जन। न पड़ते बीमार कभी जन॥ 16॥
मात्रा-भोजन, मेहनत साथ। स्वस्थ रहोगे, दिन व रात॥ 20॥
बिना न उबला, भोज्य कभी हो। फिर बीमारी, कभी नहीं हो॥ 10॥
काली मिर्च; पाचक होती। कण्ठ-साफ कर, ठण्डक देती॥ 68॥
तुलसी; ज्वर को हर लेती। तन को स्वस्थ भी कर देती॥ 70॥
पिपली; कफ-हारक होती। खाँसी में राहत देती॥ 71॥
नीम; पित्त को है हरती। ब्राह्मी; दिमाग-ठण्डा रखती॥ 72॥

-सदाचार सूक्ति काव्य

2. सम्यक एकांत (Isolation)

एकांते सामायिकं, निर्व्याक्षेपे वनेषु वास्तुषू च।
चैत्यशलयेषु वापि च, परिचे त्वयं प्रसन्नधिया॥ (र.क.श्रा.)
ध्यान-क्षेत्र एकान्त हो, बाधाओं से दूर।
जंगल, गृह-मंदिर रहे, प्रसन्नता से पूर॥

-सम्यक् ध्यान शतक

3. ध्यान हेतु अलगाव सिद्धांत (Quarantine) [दूरी व मर्यादा]

प्रकृति की गोद में, करना ध्यान व योग।
प्राणायाम से नष्ट हों, जीवन के सब रोग॥

4. संयम रूपी वैक्सीन :-

समता सर्वभूतेषु, संयमे शुभ भावना।
आर्त्त, रौद्र परित्यागस्, तद्धि सामायिकं मतं॥ -आगम ग्रन्थ
सब जीवों पर साम्य हो, संयम भावन नेक।
आर्त्त, रौद्र का त्याग हो, समता पूर्ण विवेक॥ -सम्यक् ध्यान शतक

* खानपान और रहन सहन का संयम ही बड़ी से बड़ी बीमारी को जीतने में सक्षम होता है जिसके उदाहरण व्रती और साधु संत हैं।

* कोरोना तांडव के समय वे ही सुरक्षित रहे, जो संयमित रहे। जैन जीवन पद्यति, संयमरूपी सावधानी से भरपूर है, जो कि रोगमुक्ति का अमोघ उपाय है।

''जान बची तो सब जहाँ है''
कोरोना ऐसी बीमारी आई, जिससे लड़ना महा लड़ाई।
दस मिनिट तक हाथ धुलाई, घर व बाहर साफ सफाई॥
बचकर रहना भीड़ से भाई, इसी में है सबकी भलाई॥

* और भी लोगों द्वारा कहा गया है-

= शेरपाओं की उल्लेखनीय शक्ति का रहस्य उनका शाकाहारी होना और मुख्यतः आलू, दूध और पनीर पर निर्भर होना।

-एवरेस्ट विजेता तेनसिंग

= It is good neither to eat flesh nor to drink wine, nor anything where thy brothers stumbleth or is offended or is made weak

-Saint Lucas in New Testament

उपसंहार :-

कोरोना का संकट आया, शब्द-शब्द में कोरोना।
देश का कोना-कोना कहता, स्वास्थ्य मिले बस कोरोना॥ -आ.आर्जवसागर

कोरोना काल ने हमें यह मानने के लिए मजबूर किया कि पूजा-पाठ आदि क्रियाएँ, देशकाल के अनुकूल परिवर्तित हो सकते हैं।

देश के हमारे ऊपर, हैं बहुत एहसान।
धर्म और संस्कृति से देश ही है महान।
सच्चा राष्ट्रभक्त वह जो, दे रहा है दान,

कोरोना से बचाव का कर रहा है काम।
ताकि घर में रह हम, कर सकें परमात्मा का ध्यान॥
पैसा तो है चीज ही क्या, जान तो जहान,
करुणा प्रेम भावना से, कर मुक्त हस्तदान।
जोखिम उठा जान की, कोरोना से लड़ रहे,
मानवता के काम में दिन-रात भिड़ रहे।
नहीं छुपा शक्ति को कर, सेवा है महान,
देश के हमारे ऊपर, बहुत है एहसान॥

विडंबना तो यह है कि यह सब होने के बावजूद, लोग जीवन की अनिश्चितता को महसूस नहीं कर पा रहे हैं। फिर भी हमारी प्राचीन सभ्यताओं और धर्म की धरोहरों ने पुनः अपनी सहभागिता साबित की है, जो हमारी रक्षा में कामयाब अवश्य होगी।

अंत में यही कामना करता हूँ कि आने वाला वर्ष या आने वाला समय मंगलमय हो। (सचेत हुए मानव को और सर्व जीवों को) समाज संगठित रहे और सभी मिल जुलकर, धर्म और समाज के उत्थान हेतु प्रयास करते रहें।

''जय जिनेन्द्र''

मनुष्य को भगवान बना देता है त्याग

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी भक्ति की परीक्षा में सफल हुए। गुरुदेव आर्जवसागर जी अब वर्षा ऋतु के समापन तक राज्य की सीमा नहीं लांघेंगे। इसके बाद मुनिराज ने दिगम्बर साधु द्वारा की जाने वाली वर्षायोग के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वर्षा योग में व्रत नियम बहुत लिये जाते हैं और किसी वस्तु के त्याग में बड़ी शक्ति होती है जैसे बैंक में जमा फिक्स डिपाजिट का पैसा बहुत लाभ देता है और घर में पड़ा पैसा चाहे खर्च न हो, ब्याज बढ़ोत्तरी का कारण नहीं होता इसी तरह भले कोई किसी वस्तु का उपयोग (भोग) न करे तो भी पाप बंध तो होता ही है लेकिन एक सीमा तक के लिए त्याग कर देने पर यह त्याग-नियम कर्म निर्जरा, पुण्य बंध के साथ स्वर्ग, मोक्ष तक पहुँचा देता है। गुरुदेव आर्जवसागर जी ने मुंबई व श्रीनगर में हुए बम विस्फोटों से मारे गये लोगों व उनके परिजनों के प्रति दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि इनके लिए हम भी कुछ त्याग करें क्योंकि त्याग धर्म के प्रभाव से ही अहिंसा का साम्राज्य स्थापित किया जा सकता है। त्याग धर्म की महिमा बतलाते हुए मुनिराज ने कहा कि त्याग मनुष्य को सभी पापों से छुड़ाकर भगवान बना देता है।

साभार: आर्जव-वाणी

जैन ग्रंथों का संपूर्ण सार : आगम अनुयोग

इंजी. बहिन ऋषिका जैन, दमोह

आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित परम पूज्य आध्यात्म योगी आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागरजी महाराज ने मोक्षमार्गोपयोगी अनेक बहुमूल्य कृतियों की रचना की है; जिनमें 'आगम-अनुयोग' एक ऐसी अनूठी, अद्वितीय (Unique)कृति है, जिसमें जैन धर्म के चारों अनुयोगों (प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग) रूप ग्रंथों का सार समाहित है। यह बहुमूल्य कृति स्वाध्याय प्रेमी श्रावकों के लिये अत्यंत मूल्यवान एवं बहुउपयोगी है। इसके माध्यम से आचार्यश्री ने जैन आगम की, लोक-अलोक की विस्तृत जानकारी का समावेश इसमें किया गया है। यह कृति प्रश्नोत्तरी रूप में अत्यंत सरल शब्दों में लिखित है। इसके माध्यम से सम्यग्ज्ञान भूषण, सिद्धांत भूषण पदवी की उपाधि भी प्राप्त हो सकती है। आगम अनुयोग (प्रश्नोत्तर प्रदीप) का मुख्य उद्देश्य भव्यजीवों को स्वाध्याय के माध्यम से आगम ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त कराना है।

गुरुवर की यह अनूठी कृति संपूर्ण जैन दर्शन को बताने वाली है एवं अत्यंत सरल शब्दों में आगम ग्रन्थों का मुख्य ज्ञान कराने वाली है। हम सभी का परम सौभाग्य है कि हमें गुरुवर रचित इस 'आगम-अनुयोग' कृति को पढ़ने का, इसका स्वाध्याय करने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

'आगम-अनुयोग' कृति में करीब 1274 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से प्रथमानुयोग एवं करणानुयोग का विशेष वर्णन किया है।

त्रेसठ (63) शलाका पुरुषों, कुलकरों आदि महापुरुषों संबंधी पुराणों का संपूर्ण सारांश 'आगम-अनुयोग' में प्रथमानुयोग में लगभग 404 प्रश्नों में समाहित है। यह प्रथमानुयोग का ज्ञान भव्यों के लिये अत्यंत उपकारी है। इसके ज्ञान से जीवों को सम्यग्दर्शनादि रूप बोधि और धर्मध्यान, शुक्लध्यान रूप समाधि की प्राप्ति होती है। इसी अनुयोग में भोगभूमि-कर्मभूमि की व्यवस्था, पुरुषार्थ की भी विस्तृत विवेचन है।

आचार्य गुरुदेव ने 63 शलाका पुरुषों में भी सर्वप्रथम तीर्थंकर महापुरुषों का वर्णन किया है कि तीर्थंकर कौन होते हैं? किस तरह तीर्थंकर प्रकृति का संचय होता है? भरत क्षेत्र, विदेह क्षेत्र संबंधी कितने-कितने तीर्थंकर होते हैं? किस तरह सौधर्मेन्द्र-शचि इन्द्राणि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव प्रभु का जन्मोत्सव मनाते हैं? किस कारण से उन्हें वैराग्य होता है? किस तरह अयोध्या की रचना होती है? कैसे उन्हें केवलज्ञान प्राप्त होता है? और उनका समवशरण कितना विशाल विस्तार वाला होता है? कौन से जीव उस समवशरण में उनकी दिव्यध्वनि रूप उपदेश को ग्रहण करते हैं? आदि विशेष शंकाओं का समाधान इस प्रथमानुयोग खण्ड में प्रश्नोत्तर के माध्यम से किया गया है। तीर्थंकरों के विशेष वर्णन के बाद चक्रवर्ती और उनका वैभव आदि एवं बलदेव, नारायण, प्रतिनारायण, कामदेव आदि महापुरुषों का भी उल्लेख इसमें समाहित है।

करणानुयोग का वर्णन भी प्रश्न 405 से लेकर 1274 प्रश्न तक किया गया है, जिसमें विशेष रूप से तीन लोक का वर्णन समाहित है। अर्थात् लोक-अलोक का विभाग, गणित, उसकी रचना एवं उसमें जीवों का

निवास, युग परिवर्तन, प्ररूपणा आदि का ज्ञान प्राप्त कराने वाला यह करणानुयोग खण्ड है। तीन लोक (ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक) के वर्णन में अधोलोक में नरकादि एवं उनके पटलों का विस्तार, वहाँ का वातावरण, नरक के दुःख वहाँ उत्पन्न होने वाले जीवों की लेश्या, नरकों की आयु एवं वहाँ कौन से जीव किस कारण से जन्म लेते हैं आदि का भी मुख्यतः से वर्णन किया गया है। मध्यलोक में भी युग परिवर्तन, कल्पकाल, उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल आदि का भी विशेष वर्णन है। एवं देवों की विस्तृत जानकारी भी इसमें समाहित है। (सर्वद्वीप और समुद्र, उनपर स्थित पर्वतों का, भोगभूमि-कर्मभूमि की व्यवस्था का, अकृत्रिम चैत्यालयों का भी विशेष वर्णन प्रश्नोत्तरों के माध्यम से किया गया है।)

यह 'आगम-अनुयोग' प्रश्नोत्तर-प्रदीप हम भव्य जीवों को कल्याणकारी रूप है यह कृति मोक्ष रूपी पद (शिवालय) को शीघ्र ही प्रदान करायेगी।

जिनके दर्शन से नयन धन्य हो जाते हैं, जिनको आहार दान देने से हाथ धन्य हो जाते हैं, जिनका सुमरण करने से मन धन्य हो जाता है, जिनका गुणगान करने से कण्ठ धन्य हो जाता है, जिनके पास जाने से जीवन धन्य हो जाता है। ऐसे आगम-अनुयोग ग्रन्थ के प्रणेता परमोपकारी, धर्म प्रभावक, षोडशकारण व्रत प्रणेता, मोक्षमार्ग उपदेशक, आध्यात्मिक संत आचार्य गुरुदेव श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के चरणों में बारंबार नमोस्तु.... नमोस्तु.... नमोस्तु।

सच्चा ध्यान साधु को ही हो सकता है

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

विशेष प्रवचन में जैन गुरुदेव आर्जवसागरजी ने कहा कि मात्र ज्ञान प्राप्त करने से जीवन शोभा को प्राप्त नहीं होता। ज्ञान के साथ-साथ जीवन में चरित्र भी होना चाहिए। ज्ञान बीज की तरह है। उसमें चारित्र के पुष्प व फल भी उत्पन्न होने चाहिए। सच्चा ज्ञानी नियम से त्यागी बनता है। घर-गृहस्थी वाले लोग शून्य का ध्यान नहीं कर सकते। वे कितनी भी साधना कर लें, लेकिन उनका ध्यान शून्य तक नहीं पहुंच सकता। मुनिराज ने कहा कि जब तक हमारा मोबाइल नेटवर्क से जुड़ा है, स्विच ऑन है, तो रिंग और वाइब्रेशन होता रहता है। हमें अपना मन पूर्ण स्थिर करने के लिए घर-परिवार, पद-पैसे से अपना संपर्क समाप्त कर लेना चाहिए। इसलिए ऐसा ध्यान सच्चे साधु को ही हो सकता है, गृहस्थों को नहीं। मुनिराज ने कहा, जो अपने जीवन में अत्यधिक परिग्रह संचित करने का भाव रखते हैं, उन्हें मर कर नरक में जाना पड़ता है। ध्यान मोक्ष का साधन है ध्यान के लिए निर्ग्रन्थ होना जरूरी है और निर्ग्रन्थ होने के लिए संसार से विरक्ति जरूरी है।

साभार: आर्जव-वाणी

मोक्षमार्ग में बहुउपयोगी तीर्थोदय आदि काव्यरूप आचार्यश्री आर्जवसागरजी का साहित्य

ब्र.वीरेन्द्र शास्त्री

संसार के दुःखों से छूट कर सच्चे सुख की प्राप्ति ही सब धर्मों का सार है। प्रत्येक धर्म का यही लक्ष्य होता है कि जीव सदा के लिए जन्म-मरण के महान दुःखों से बचकर एक ऐसी स्थिति को प्राप्त करें, जिसे मोक्ष के नाम से हम जानते हैं।

''आतम को हित है सुख, सो सुख आकुलता बिन कहिए।''
आकुलता शिवमाँहि न तातैं, शिवमग लाग्यो चहिए॥

सुख वही जो आकुलता से रहित हो और आकुलता से रहित सिर्फ एक जगह है जो है 'शिव' यानि मोक्ष। इसको सभी धर्म वाले अपने-अपने नाम से जानते हैं, कोई मोक्ष-शिव कहता है, कोई उसे बैकुण्ठ के नाम से पुकारते हैं, कोई जन्नत। नाम चाहे अलग-अलग हों, रास्ते चाहे अलग-अलग मानते हों, क्रियाओं में थोड़ा बहुत या बहुतायत मात्रा में अन्तर हो सकता है। उस अन्तर से फल में भी अन्तर हो सकता है किन्तु यहाँ बात लक्ष्य की हो रही है। लक्ष्य सभी महान ही रखते हैं। रास्ते, साधना विपरीतता को प्राप्त हो सकते हैं। जैन दर्शन में जैसा साधन रहता है वैसा ही साध्य प्राप्त होता है। अथवा यूँ कहें कि साधन समीचीन रहता है तो उचित साध्य प्राप्त हो सकता है। और साध्य उत्कृष्ट है तो साधन, रास्ते, कारण तद्योग्य होना आवश्यक है। यही बात जैन दर्शन की महानता को उजागर करती है। यदि आत्मा का हित करना है तो शिवमग में लगना ही होगा उसके बिना त्रिकाल में मुक्ति संभव नहीं, सिद्धि संभव नहीं। किसी भी कार्य की सिद्धि भी तभी होती है जब हम उस कार्य को सही प्रयोजन, ईमानदारी, उत्साह, लगन, मेहनत के साथ करें। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने मोक्षमार्ग में सहायक सत्साहित्य की विवेचना की। सत्साहित्य की जरूरत इसलिए है क्योंकि कई लोग कहते हैं कि दूध तो दूध है लेकिन उसके कई प्रकार होते हैं। गाय का दूध आंखों की ज्योति को बढ़ाता है। किन्तु आंकड़े का दूध आंखों की ज्योति को खत्म करता है। ठीक वैसे ही खोटे साहित्य और सत् साहित्य का कथन समझना चाहिए। जो खुद पारस हो (पूर्व में आचार्यश्री का नाम पारसचंद जैन था) वो तो अपने सत्साहित्य से जग को पारस या अपने प्रभाव से सोने जैसा बनाने वाले हैं। जो स्वयं शिखरचंद से आये हैं वे अपनी साधना से खुद शिखर बनने वाले हैं और दूसरों को भी शिखर पर पहुँचाने वाले हैं।

महान् ध्यानी तपस्वी आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज की ध्यान साधना पूरे साधु जगत् में अनूठी

है। उसी साधना के प्रभाव से मोक्षमार्ग में सहायक एक ऐसे सत्साहित्य की परम्परा बनाई जो मोक्ष पथिक को पाथेय का काम करेगी। आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने विशुद्ध भावों से सोलहकारण भावनाओं पर छंदों की रचना की। एक उपवास और एक आहार जैसी साधना से इन्होंने काव्य में सोलहकारण भावनाओं का सृजन किया। कहने का आशय है कि इन्होंने उन भावनाओं को पहले स्वयं आत्मसात् किया फिर जब इनके जीवन में आ गई तो दूसरों को उपदेश दिया। कहा ही है कि :-

'अप्पदीपो भव' स्वयं भी प्रकाशित हुए और दूसरों को भी प्रकाशित कर रहे हैं। सोलहकारण भावना जो भाता है, वह तीर्थंकर पद प्राप्त करता है।

'सोलहकारण भावना भाय सोलह तीर्थंकर पद पाय'

निश्चित रूप से ये तीर्थंकर बनेंगे और हम सब को भी बनायेंगे। तीर्थंकर स्वयं सबसे पहले मार्ग पर चलते हैं और फिर दूसरों को चलने का उपदेश देते हैं। पहले वे स्वयं मार्ग पर चलकर देखते हैं, परेशानियों को सहन करते हैं, जब तक केवल ज्ञान नहीं हो जाता तब तक मुनि अवस्था में कभी भी उपदेश नहीं देते हैं। वैसे ही आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने जब तक स्वयं सोलहकारण की साधना नहीं की तब तक छंदों की रचना नहीं की। जब एक उपवास, एक आहार के माध्यम से सोलहकारण की साधना शुरू की तब अपनी भावनाओं को छंदों में निबद्ध करके हम सब भक्तों, श्रावकों के उद्धार के लिए अनुपमकृति समाज को निःस्वार्थ भाव से दी।

जैनधर्म की हर एक क्रिया, हर एक ग्रंथ, हर एक प्रवचन, मोक्षमार्ग को दिखाता है। तदनुरूप आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का सम्पूर्ण साहित्य मोक्षमार्ग से युक्त है- समग्र साहित्य में श्रावकों व मुनियों के लिए सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र की मुख्यता का कथन करते हुए और उस पर श्रद्धान ज्ञान और आचरण में लाने का कथन करता है।

तीर्थोदय काव्य तो वास्तविकता में तीर्थंकर बनने की प्रेरणा देता है। इन काव्य में 704 (सातशतक) पद्य हैं, और यह कर्मों की निर्जरा से मोक्षफल पाने का संदेश देता है। रचयिता के अनुसार-

सोलह कारण तीर्थ- भावना, भाऊँ कर्म नाशने को।
यह तीर्थोदय काव्य लिखूँ मैं, भव-सुख तज, शिवपाने को॥

तीर्थोदय काव्य में छह (6) सोपान हैं, लगभग 90 उपशीर्षक एवं 704 पद्य हैं।

पहले सोपान में मंगल भूमिका है, जो मोक्ष मार्ग के पथिक को दृढ़ता प्रदान करता है। इसी में सोलहकारण भावनाओं का वर्णन है। विनय को मोक्ष का द्वार भी कहा है, और है भी, कारण-'विनय' सोलहकारण भावनाओं में, दस धर्मों में, बारह तपों में, उच्च गोत्र के बंध में, अन्य सभी जगह है। सभी जगह

विनय को उचित स्थान है व इनके बिना कुछ हो भी नहीं सकता। आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के प्रति बहुत ही नम्र हैं और भी अन्य आचार्य के प्रति भी इनकी विनय रहती है। इन्होंने ''**आर्जव कविताएँ**'' नामक कृति में भी सभी के प्रति विनय दर्शायी है। हमारी भावना है इनकी विनय दिन-प्रति-दिन सम्पन्नता को प्राप्त होती जाये। द्वितीय सोपान में सम्यग्दर्शन का सांगोपांग वर्णन है। तृतीय सोपान में 233 शीर्षकों के माध्यम से विनय, 12 व्रतों, प्रतिमाओं का कथन किया है। चतुर्थ सोपान में संवेग, ज्ञान, तप, त्याग, समाधि व साधुसेवा आदि का अनुपम कथन है। पंचम सोपान में अर्हत् भक्ति आदि का कथन है। और अन्तिम व षष्ठम सोपान में षडावश्यक, वात्सल्य, मार्गप्रभावना आदि का वर्णन विद्यमान है।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने, शब्दों के साथ सिद्धान्तों का उचित व समीचीन प्रयोग किया है जैसे-

सम्यग्दर्शन नौका में अब, बैठ भवोदधि तरना है।
रत्नत्रय सद्‌गुण रत्नों से, आत्म-खजाना भरना है॥
अणुव्रत धारी पाक्षिक, नैष्ठिक, श्रावक कर्म खपाते हैं।
सल्लेखन को धारण करते, साधक वे बन जाते हैं॥
निर्मल भावों सह वे होते, बाल-सु-पंडित मरण करे।
महाऋद्धि सह देव सु-पद पा, नरगति पा शिव-गमन करें॥

कहने का तात्पर्य है कि आचार्यश्री के काव्यों में, रचनाओं में काव्य सौन्दर्य के साथ सिद्धान्तों का समावेश है। और प्राणी मात्र के हितैषी महावीर भगवान के जैनधर्म के अमिट वाक्य ''पाप से घृणा करो पापी से नहीं'' को भी सरल रीति से स्थान दिया है सूक्तियों, लोकोक्तियों, मुहावरों, प्रतीकों के प्रसंगों को यथा योग्य स्थान देकर काव्य को श्रवणीय बना दिया है यथा.......

★ **सदा पाप से घृणा करो तुम, पापी से नहिं घृणा करो।**
★ **चर्म-चक्षु हैं नहीं काम के, जहाँ ज्ञान के चक्षु नहीं।**
★ **हस्ति सम वह स्नान समझ लो, रज से पुनः नहाना है।**
★ **सूर्य किरण की चकाचौंध पर, जैसे आँखें ना टिकती।**

★ **नहीं जगत् में मेरे सदृश, ज्ञानवान पंडित कोई।**
★ **नहीं महाकवि, शास्त्री मुझ सम, जग में और दिखे कोई।**
★ **जो भी दिखते अज्ञ सभी हैं, जुगनु-सम सूरज आगे।**
★ **ज्ञान-गर्वधर मिथ्यात्वी वह, तथा प्रशंसा जो माँगे।**

षोडशकारण भावना, जानो मेरु समान।
सव पर्वत नीचे दिखें, दे शिव पद शुभ जान॥

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने ब्रह्मचर्याणुव्रत, स्वादार संतोषव्रत का अनुपम कथन किया है जहाँ इन्होंने श्रावकों को समझाया कि विवाह मात्र काम वासना की पूर्ति के लिए नहीं वरन् विवाह से उत्पन्न संतानें मोक्षमार्ग में आगे बढ़ें धर्म की उन्नति में सहायक बनें.......

गृही विवेकी सन्तानों की, हो उपलब्धि जो चाहे।
करें अतः वह विवाह अपना, जैनी जन बढ़ना चाहे॥
सन्तानें गर मोक्षमार्ग में, जाएँ धर्म समुन्नत हो।
ना सन्तान अगर चाहे तो, ब्रह्मचर्य में उन्नत हो।
ना मानव वह विषय वासना, हेतु विवाह रचाता है।
न सन्तान बढ़े चाहें तो, ब्रह्मचर्य अपनाता है॥
नहीं अंग का छेद-भेद वह, कभी भूल करवाता है।
तथा नहीं वह धर्म मार्ग से, दूर कभी भी जाता है॥

साथ श्रावकों को गृहस्थ धर्म पालन करने के लिए जीवरक्षण के लिए पानी छानने (जल गालन की विधि) की विधि दृष्टव्य है, जिसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज ने अपने काव्य में किया है-

किसी पात्र अरु रस्सी द्वारा, जल निकाल के छानें वे।
मोटा कपड़ा दुहरा होता, धीरे-धीरे छानें वे॥
बिना छना जल गिरे न नीचे, योग्य पात्र हो ध्यान रहे।
जीवानी को नीर सतह पर, धीरे छोड़ें ज्ञान रहे॥

सन् 1991 में जब आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का चातुर्मास महाराष्ट्र प्रान्त की कोपरगाँव नामक नगरी में हुआ तब इन्होंने **धर्म प्रभावना शतक** का सृजन किया। यह कृति निःसंदेह श्रावकों को धर्म के मर्म को सरल तरीके से समझने के लिए अनूठा वरदान है। इसके उपरान्त तो जैसे आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज तो सत् साहित्य के निर्माता उद्गम स्थल जैसे होते गये। जैसे सरिता आगे बढ़ती जाती है, विशाल रूप लेती जाती है, वैसे ही दिन-प्रतिदिन आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज का साहित्य मोक्षमार्ग में पथिकों को व्यापक रूप से धर्म वृद्धि हेतु बढ़ता चला गया, और एक सुदीर्घ व सुव्यवस्थित परम्परा हो गयी। जिसमें '**परमार्थ साधना**' जो कि प्रवचनों का संग्रह है, भोपाल 2004 में चातुर्मास के दौरान श्रावकों को प्राप्त हुई। इसमें श्रावकों को सद्आचरण करने की प्रेरणा रूप विषय का संकलन है।

मात्र प्रवचनों का संग्रह या प्रबुद्ध लोगों के लिए काव्य या कविता ही आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज की लेखनी से प्राप्त नहीं हुई वरन् बालकों/ बालिकाओं के ज्ञानाराधन हेतु '**बचपन का संस्कार**' कृति का निर्माण हुआ। बालकों का आचार-विचार, रहन-सहन, अष्टमूल गुण नियम ये सब बातें उस पुस्तक में समावित हैं।

जैनधर्म में वर्णित कर्म व्यवस्था को समझने के लिए और विपाकविचय धर्मध्यान का ज्ञान करने हेतु आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज ने '**जैन धर्म में कर्म व्यवस्था**'' नामक कृति का सृजन किया। इस कृति को देखकर और पढ़कर पूज्य मुनिश्री क्षमासागर जी महाराज और उनकी अनुपम कृति ''**कर्म कैसे करें**'' का ध्यान हो आता है।

दूसरों को ज्ञान देने में निरत आचार्य आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में सतना में शिक्षण शिविर के दौरान इन्होंने **वारसाणुवेक्खा** एवं **इष्टोपदेश** ग्रंथ का अनुवाद 2007 के ग्रीष्मकालीन प्रवास में किया।

113 दोहा (पद्यों) में निबद्ध '**सम्यक् ध्यान शतक**' को ध्यान से कर्म निर्जरा विषय पर आधारित सुन्दर रचना की। इसी वर्ष 2008 में ग्वालियर में ही चातुर्मास के दौरान पाठशालाओं के लिए शिष्टाचार, नियमावली, मर्यादा, उन्नति व सुचारु रूप से संचालित करने आदि के विषय के साथ '**नेक जीवन**' कृति समाज को उपलब्ध कराई।

सन् 2006 व 2012 के चातुर्मास के दौरान समाचार पत्रों में प्रकाशित प्रवचनों का संकलन कर एक पुस्तक **आर्जव वाणी** भी तैयार हुई।

विद्वत् वर्ग व समाज के लिए अनूठा संग्रह '**पर्युषण पीयूष**' पुस्तक मील का पत्थर साबित होती है। यह पुस्तक 2005 में अशोकनगर में हुये चातुर्मास के प्रवचनों से रची गयी। सरल तरीके से धर्मों को समझने व आत्मसात करने के लिए मुनि व श्रावकों के लिए यह पुस्तक बहुउपयोगी है।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज की मौलिक कविताओं का संग्रह '**आर्जव-कविताएँ**' हिन्दी में प्रकाशित हुई। इस कृति में सभी सिद्ध, अतिशय, तीर्थ क्षेत्रों का अकल्पनीय वर्णन कविताओं के माध्यम से है। एक-एक क्षेत्र पर स्वतंत्र एक-एक कविता मुनिश्री के द्वारा बनाई गई। पूर्ववर्ती आचार्यों के प्रति समर्पण व विनय इस संग्रह में संकलित कविताओं में देखते ही बनता है। पूज्य मुनिवर ने तमिल भाषा में भी कविताएँ लिखी व प्रकाशित हुई हैं।

इन सब कृति के अलावा देवसेनस्वामी महाराज के **तत्त्वसार** व आचार्य अमोघवर्ष स्वामी के **प्रश्नोत्तर रत्नमालिका** का पद्यानुवाद इन्होंने अपनी लेखनी से किया है। **जिनागम संग्रह** में भी द्रव्यसंग्रह जी

और **समाधितंत्र जी** का पद्यानुवाद इन्होंने किया है। प्रश्नों के माध्यम से जैन धर्म के मर्म को जानने के लिए इनकी कृति **जैनागम संस्कार** एक कुंजी का काम करती है। इसमें प्रश्नोत्तर के माध्यम से सरल तरीके से जैनधर्म के सिद्धांतों को उदाहरण के माध्यम से समझाया गया है। अनेकान्त, स्याद्वाद, निमित्त-उपादान आदि अनेक महत्वपूर्ण विषयों के साथ **'जैन शासन का हृदय'** पुस्तक प्रवचन संग्रह अद्वितीय है। विद्वत्वर्ग के लिए लाभकारी है।

इन सब कृतियों में चारित्रवान, ध्यानमूर्ति, प्रसन्नमूर्ति आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने मोक्षमार्ग का और मोक्षमार्ग में सहायक विषयों का सूक्ष्मता से, गहनता से, चिन्तन से जो ज्ञान दिया है, वह निश्चितरूप से श्रावकों की श्रद्धा को बलवती करेगा, ज्ञान को समीचीन करेगा और चरित्र में दृढ़ करेगा, निश्चित रूप से आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का संपूर्ण सत् साहित्य गागर में सागर सम व महा सिन्धुवत् है। मुनि व श्रावक दोनों के आचार-विचार का रत्नत्रय की विशिष्टता से युक्त विवेचन श्रावकों व मुनियों दोनों को मोक्षमार्ग प्रदान करके उस पर आगे बढ़ाकर मोक्ष तक पहुँचायेगा।

यथा-तीर्थोदय काव्य में कहा ही है कि :-

सम्यग्दर्शन - नौका में अब, बैठ भवोदधि तरना है।
रत्नत्रय सद्गुण रत्नों से, आत्म-खजाना भरना है॥
देशव्रती जु, पाक्षिक, नैष्ठिक, श्रावक कर्म खपाते हैं।
सल्लेखन को धारण करते, साधक वे बन जाते हैं॥
निर्मल भावों सह वे होते, बाल-सु-पंडित मरण करें।
महाऋद्धि सह देव सु-पद पा, नरगति पा शिव-गमन करें॥

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज अपने पूर्ववर्ती आचार्यों के प्रति विनय को इसी तरह निरन्तर बढ़ाकर वह विनय सम्पन्नता हम सबका मोक्षमार्ग प्रशस्त करें ऐसी मंगल भावना के साथ सविनय नमोस्तु।

हीरापुर जिला-सागर (म.प्र.)
75091-80187, 94147-65331

निज में रमना समता है।
पर में पड़ता ममता है॥
जो दिखता है वो पर है।
जो अपना है अन्दर है॥

आर्जव-वाणी

गुरुवर के चातुर्मास से पावन हुई लखनादौन नगरी

आचार्य गुरुदेव श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का 34 वां पावन वर्षायोग लखनादौन नगरी में संपन्न हुआ। वर्षायोग स्थापना के पूर्व 24 जुलाई 2021 को वीर शासन जयंती एवं गुरु पूर्णिमा महोत्सव के कार्यक्रम का आयोजन बाजार में बने पाण्डाल में किया गया जिसमें आचार्य छत्तीसी विधान का आयोजन भी किया गया। जब आचार्य गुरुदेव की देशना हुई तो मानों ऐसा लगा जैसे साक्षात् समवसरण में भगवान महावीर की दिव्यध्वनि स्वरूप अमृत वचन खिर रहे हों। गुरुदेव ने भगवान महावीर से निकली वाणी एवं आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से संबंधित अनेक गुरु संस्मरण एवं दृष्टांत सुनाये।

वर्षायोग कलश स्थापना 2021:- दिनांक 25 जुलाई 2021 को स्थानीय ब्र. विजय जैन के एवं ललितपुर से पधारे प्रदीप शास्त्रीजी के निर्देशन में दोपहर 2:00 बजे से कलश स्थापना कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ जिसमें पाठशाला के नन्हे-नन्हे बच्चों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति एवं चन्दनबाला बालिका मण्डल की बहिनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। तद् उपरांत आचार्यश्री आर्जवसागर पावन वर्षायोग समिति के कमेटीजनों द्वारा गुरु चित्रानावरण, दीप प्रज्ज्वलन के साथ तमिलनाडु, अजमेर, दुबई, सूरत, दिल्ली, गुड़गाँव, अहमदाबाद, भोपाल, ललितपुर, जबलपुर, सागर, पथरिया, दमोह आदि अनेक महानगरों से पधारे भक्तगणों का सम्मान किया गया एवं इन्हीं अतिथियों द्वारा गुरुदेव की बहुत ही भक्ति भावना के साथ उत्साहपूर्वक मंगलमय संगीतमय पूजन भी की गई।

श्रीमान् विनोदजी बाकलीवाल की ओर से गुरुवर का पाद प्रक्षालन किया गया एवं लोकेशजी जैन (दिल्ली), अंकुर मेहता (मुनिश्री भाग्यसागरजी के पूर्वावस्था के बेटे) द्वारा गुरु करकमलों में शास्त्रदान भी किया गया। तद्उपरांत बोलियों के माध्यम से करीब 21 मंगल कलश स्थापना की शृंखला में प्रथम 'रत्नत्रय कलश' लेने का सौभाग्य श्रेष्ठी श्रीमान इन्दर चन्द्रजी, दीपककुमार, विजयकुमार जी (चातुर्मास कमेटी अध्यक्ष) सिंघई परिवार को, द्वितीय 'धर्मप्रभावना कलश' लेने का सौभाग्य सिंघई प्रकाशचन्द्र, अल्केशकुमार, विकासकुमारजी परिवार एवं तृतीय 'वैय्यावृत्ति कलश' लेने का सौभाग्य श्रेष्ठी श्रीमान देवेन्द्रकुमार, संजीवकुमार, राजीवकुमार नीरज कुमार सिंघई परिवार को प्राप्त हुआ। अनेक स्वर्णिम कलशों की स्थापना की गई। तद्उपरांत आचार्यश्री की दिव्य देशना प्रारंभ हुई। गुरुवर ने अपने मांगलिक प्रवचनों में कहा कि लखनादौन तो ऐसे पूर्वजों की नगरी है; जिन्होंने चतुर्थकालीन, अत्यंत प्राचीन, अष्ट प्रतिहार्य से युक्त प्रतिमाओं को पाया है। यह तो अतिशय क्षेत्र रूपी महान नगरी है। गुरुदर्शन की महिमा तथा गुरु-भक्ति के फल को सुनकर लोग भाव-विभोर हो गये। सभी श्रद्धालुओं ने अपना सौभाग्य समझा कि आज हमें भी ऐसे महान संत के महान शिष्य के चातुर्मास का अवसर प्राप्त हो रहा है। इस मंगल चातुर्मास के दौरान सुबह ध्यान (सम्यक् ध्यान शतक) की कक्षा, दोपहर में बहिन ऋषिका जैन दमोह द्वारा छहढाला एवं एकीभाव स्तोत्र आदि की कक्षाएँ एवं गुरुदेव द्वारा सायंकाल जीवन संस्कार व सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी प्रदायी आगम-अनुयोग प्रश्नोत्तर प्रदीप की कक्षा चलाई गई। कक्षा के अंत में पेपर के माध्यम से लोगों के ज्ञान की परीक्षा भी की गई तथा प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान

प्राप्त करने वालों को सम्मानित भी किया गया।

मोक्ष सप्तमी एवं रक्षाबंधन पर्व का आयोजनः- इसी के बीच दिनांक 15 अगस्त 2021 को मोक्ष सप्तमी के पावन अवसर पर भ.पार्श्वनाथ का निर्वाण महोत्सव भी सानंद संपन्न किया गया। इस दिन पार्श्वनाथ भगवान के मोक्ष प्राप्ति के उपलक्ष्य में निर्वाण लाडू समर्पण एवं सम्मेदशिखर महामण्डल विधान का आयोजन भी किया गया।

दिनाँक 22 अगस्त 2021 को रक्षाबंधन महापर्व के दौरान भ.श्रेयांसनाथ निर्वाण लाडू समर्पण कार्यक्रम का आयोजन महावीर मंदिर स्थित प्रांगण के विशाल पाण्डाल में किया गया। जिसमें दमोह तमिलनाडू से पधारे अतिथियों द्वारा सर्वप्रथम चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया तथा अनेक श्रद्धालुगणों द्वारा गुरुवर ससंघ के करकमलों में शास्त्रदान दिया गया। पश्चात् आचार्यश्री ने विष्णुकुमार मुनि द्वारा अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों की रक्षा स्वरूप कथा को सुनाया और सभी लोगों को मुनियों की रक्षा का संकल्प (नियम) दिया।

षोडशकारण व्रत अनुष्ठान कार्यक्रमः- रक्षाबंधन के दिन से ही षोडशकारण व्रत का आरंभ हुआ। आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागरजी महाराज के मंगल आशीर्वाद से एवं बीना से पधारे प्रदीप भैया के निर्देशन में लखनादौन नगर में करीब 40-45 लोगों ने सोलहकारण व्रत करने का संकल्प लिया। कुछ लोगों ने लगातार 32 दिनों तक उपवास (नीरोपवास) पूर्वक एवं अनेक लोगों ने एकाशन के साथ इस व्रत अनुष्ठान में वीतराग भगवान की भक्तिस्तुति करते हुए तीर्थंकर बनाने वाली भावनाओं को भाते हुये व्रत नियम किये। सायंकाल सोलहकारण भावना पर आधारित तीर्थोदय काव्य का पाठ भी किया गया।

दशलक्षण पर्व पर विशेष आयोजन एवं सम्यग्ज्ञान प्रशिक्षण शिविर कार्यक्रम :- लखनादौन नगर में आर्जव गुरु सान्निध्य में 10 सितम्बर से 19 सिंतम्बर 2021 तक इस महान दशलक्षण पर्व को भक्ति भाव पूर्वक बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। जिसमें प्रतिदिन 6:00 बजे से मंगल जिनाभिषेक चक्रवर्ती सौधर्म इन्द्र परिवार द्वारा शांतिधारा उपरांत सामूहिक पूजन, विधान किया गया। पश्चात् आचार्यश्री की दस धर्मों पर मंगलमयी वाणी का लाभ भी लोगों को प्राप्त हुआ। दोपहर में संघस्थ साधुजन द्वारा आचार्यश्री आर्जवसागरजी रचित जैनागम संस्कार की कक्षा एवं आचार्यश्री द्वारा तत्त्वार्थ सूत्र के दसों अध्याय का अर्थ सहित वर्णन किया गया। सायंकाल 5:00 बजे प्रतिक्रमण उपरांत गुरुभक्ति, गुरुआरती, प्रश्नमंच एवं धार्मिक कविता पाठ के कार्यक्रम उपरांत दस धर्मों पर आधारित 'धर्मभावना शतक' का पाठ भी गुरुवर द्वारा कराया गया। रात्रिकालीन में विद्वानों द्वारा प्रवचन के उपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया। दशलक्षण पर्व की समाप्ति पर चतुर्दशी के दिन श्रावकों द्वारा वार्षिक प्रतिक्रमण व अंतिम दिन सभी श्रावकों के ज्ञान की परीक्षा सम्यग्ज्ञान प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से, पेपर के माध्यम से की गई। परीक्षा में उत्तीर्ण सभी श्रावकजनों को पुरुस्कार द्वारा सम्मानित भी किया गया।

सोलहकारण व्रत उद्यापन के उपलक्ष्य में किया गया लोक कल्याण महामण्डल विधान का

आयोजन:- दिनाँक 21 सितंबर 2021 से पंच दिवसीय लोक कल्याण महामण्डल विधान का आयोजन किया गया जिसमें ध्वजारोहण करने का सौभाग्य श्रेष्ठी श्रीमान् चन्द्रकुमार, रीतेशकुमार, ऋषभकुमार परिवार को प्राप्त हुआ। इस विधान में सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य श्रेष्ठी श्रीमान निर्मलकुमार, संजयकुमार (पंचायत कमेटी अध्यक्ष), चक्रवर्ती बनने का सौभाग्य श्रीमान इंदरचन्द्र जी, दीपककुमार, विजय कुमार (चातुर्मास कमेटी अध्यक्ष) को, कुबेर इन्द्र बनने का सौभाग्य श्रीमान् संजय-सीमा जैन, ईशान इन्द्र बनने का सौभाग्य सचिन-आस्था जैन परिवार वालों को, सानतकुमार इन्द्र बनने का सौभाग्य शलभ-मंजू जैन को, माहेन्द्र इन्द्र बनने का सौभाग्य संदीप-अर्चना जैन एवं महायज्ञ नायक बनने का सौभाग्य संदीप-अर्चना जैन एवं महायज्ञ नायक बनने का सौभाग्य नरेन्द्र जैन-शकुन्तला जैन (राखी गारमेण्ट) परिवार वालों को प्राप्त हुआ। प्रतिदिन प्रातः 05:30 बजे से जाप, अनुष्ठान, 6 बजे से जिनाभिषेक, शांतिधारा उपरांत नित्य पूजन एवं लोक-कल्याण विधान को आयोजन तत्पश्चात् प्रातः 8:30 बजे से आचार्यश्री के मंगल प्रवचन एवं सायंकाल 6:15 बजे से गुरुभक्ति, गुरु आरती, प्रश्नमंच उपरांत 7:30 बजे से भव्य महाआरती का भी आयोजन एवं अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संपन्न हुये।

दिनाँक 25 सितंबर 2021 को हवन एवं 26 सितंबर को रथोत्सव तथा क्षमावाणी कार्यक्रम का आयोजन भी बड़े ही धूमधाम से किया गया।

रथोत्सव कार्यक्रम में लोक कल्याण विधान के सभी मुख्य पात्र बग्गी पर सवार थे एवं घोड़े आदि पर भी इन्द्रादि चल रहे थे। इस तरह जुलूस में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं की मौजूदगी रही। बड़े मंदिर से श्रमणपुर मंदिर तक यह रथोत्सव के आयोजन का जुलूस लखनादौन के इतिहास का पहला जुलूस था जिसमें साक्षात आचार्य ससंघ साक्षात् तीर्थंकर जैसे शोभायमान हो रहे थे। श्रमणपुर मंदिर में आचार्यश्री के दर्शनार्थ सिवनी विधायक मुनमुन राय, पिताश्री एस.डी.एम. सिद्धार्थ जैन, लियाकत अली खान नगर पंचायत अध्यक्ष, अनिल गोल्हानी जनपद पंचायत उपाध्यक्ष आदि अनेक वरिष्ठ अतिथि पधारे। इस अवसर पर दमोह, चंदेरी कटंगी, धनौरा, धूमा, घंसौर, छपारा आदि अनेक नगरों से भी भक्तगणों की मौजूदगी रही। सभी अतिथिगणों का कमेटी द्वारा सम्मान किया गया। तद्उपरांत श्रीजी का कलशाभिषेक एवं शांतिधारा भी संपन्न की गई।

गुरु दर्शनार्थ केसली से पधारे लगभग 200 शिविरार्थी:- केसली, जिला-सागर (म.प्र.) में चातुर्मास कर रहे मुनिद्वय मुनिश्री विलोकसागरजी एवं मुनिश्री विबोधसागरजी महाराज की पावन प्रेरणा से लगभग 200 श्रद्धालुगण गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के दर्शन हेतु लखनादौन पधारे। सभी ने आचार्यश्री से निवेदन किया कि गुरुदेव अभी आपने अपने दो चेतन रत्नों को हमारे नगर भेजा है अब हम सबकी अभिलाषा है कि साक्षात् आपका चातुर्मास कराने का सौभाग्य हम केसली नगरवासियों को प्राप्त हो, ''हे गुरुवर! हम सबको तारो, केसली पधारो।'' केसली नगर वासियों के पुण्योदय से आचार्यश्री के आशीर्वचन सुनने का लाभ भी उन्हें प्राप्त हुआ; जिसमें आचार्यश्री ने गुरु संस्मरण को सुनाकर भाव-विभोर कर दिया। इस अवसर पर लखनादौन कमेटी द्वारा सभी का अतिथि- सत्कार भी किया गया।

लखनादौन के इतिहास में और आचार्यश्री के सान्निध्य में प्रथम बार हुई आरती प्रतियोगिता सानंद संपन्न

दिनाँक 26 सितंबर 2021 को क्षमावाणी के पावन अवसर पर आरती प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें दमोह, कटंगी और लखनादौन जैसे अनेक नगरों से आई मण्डलियों द्वारा बहुत ही मनमोहक प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का शुभारंभ गुरु-कृपा मण्डल की महिलाओं द्वारा सुंदर मंगलाचरण पूर्वक किया गया। तत्पश्चात् दमोह से पधारे सुधीर विद्यार्थी, सुमित 'आर्जव', प्रकाश जैन आदि लोगों का कमेटीजनों द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम के दौरान लखनादौन के कलाकारों में छिपि कलाएँ भी उभर कर आईं। इसी बीच कई कलाओं को दिखाकर छोटे-छोटे बच्चों ने भी लोगों को आनंदित कर दिया।

अंत में निर्णायकों द्वारा चयनित विजेताओं को ट्राफी एवं मोमेण्टो से सम्मानित किया गया, एवं सभी प्रतिभागियों का मोमेण्टो के माध्यम से उत्साह वर्धन बढ़ाया। इस तरह की आरती प्रतियोगिता लखनादौन नगर में प्रथम बार आयोजित की गई।

मंत्रों में भावों का बड़ा महत्त्व है

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

जीवन में मंत्रों का बड़ा महत्त्व है। जैन धर्म में णमोकार मंत्र का बड़ा महत्त्व है। यह मंत्र उत्कृष्ट फलदायी है। जब हम ध्यान पूर्वक इस मंत्र का जाप करते हैं तो हमारी आन्तरिक शक्तियाँ जागृत होती हैं। ये शक्तियाँ जीवन में नई स्फूर्ति लाती हैं। आत्मा को पवित्र करती हैं। इससे बिगड़े काम बनते हैं तथा विघ्न दूर हो जाते हैं। यहाँ तक कि विष भी निर्विषता को प्राप्त हो जाता है। जाप व ध्यान सही न हो तो यह काया तक ही रह जाता है। जिस प्रकार रावण ने जाप जपा किन्तु उसमें राम को मारने का छल था अतः उसकी हार हुई और सीता ने भाव सहित जाप जपा तो अग्नि कुण्ड भी जल का कुण्ड हो गया तथा राम की जीत हुई। इसी प्रकार सोमा सती के णमोकार मंत्र के जाप के प्रभाव से नाग हीरे का हार बन गया था व सेठ सुदर्शन की सूली सिंहासन में बदल गयी थी। इस प्रकार मंत्र को पूरे मनोभाव व निस्वार्थ भाव से धीरे-धीरे व शुद्ध रूप में अक्षर, व्यंजन व मात्रा की शुद्धता को ध्यान में रखकर पढ़ना चाहिए। ऐसा श्री आचार्य आर्जवसागर जी महाराज ने मंदिर जी में अपने प्रवचन में कहा।

इसके अलावा बताया कि जिस प्रभु का मंत्र हम पढ़ रहे हैं उस प्रभु का स्वरूप हमें ध्यान आना चाहिए। तन, मन व स्थान की शुद्धि से और अधिक परिणाम मिलता है, तथा सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं जिनके माध्यम से हम वर्तमान को तो मंगलमय बनाते ही हैं साथ ही हमें दूरवर्ती चीजों का भी ज्ञान हो जाता है।

मंत्रों की शक्ति हमें सरागता से वीतरागता की ओर ले जाती है। सरागता संसार में भटकाएगी तथा वीतरागता मोक्ष के द्वार पर ले जायेगी। अतः मंत्र जाप में भाव लगना जरूरी है।

साभार : आर्जव-वाणी

सम्यग्ज्ञान-भूषण तथा सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री .... जिला ....से भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता प्राप्त है ☐ नहीं है ☐ सम्यग्ज्ञान-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ तथा सिद्धांत-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ प्रस्तुत है। मेरा पता :- ....जिला .... प्रदेश .... पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....फोन नम्बर/ मोबाईल ....ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण हेतु पंजीकृत किया जाता है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....निवासी... से **भाव विज्ञान पत्रिका** शिरोमणी संरक्षक सदस्य रुपये 50,000/- से अधिक ☐ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/- ☐ परम संरक्षक सदस्य रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन (स्थायी) सदस्यता रुपये 1,500/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पता :- ....

जिला .... प्रदेश ....पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर/ मोबाईल ....ई-मेल .... है।

दिनांक हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोटः- ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर व रसीद प्राप्त कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : प्रधान सम्पादक-डॉ. अजित कुमार जैन - 7222963457, प्रबंध सम्पादक-डॉ. सुधीर जैन - 9425011357

भाव विज्ञान परिवार

❄❄❄❄❄ शिरोमणी संरक्षक ❄❄❄❄❄

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड) ● डॉ. जैन संकेत शैलेष मेहता, सूरत ● श्री जैन श्रेणिक श्रेयस बीएल पचन्ना बैंग्लोर ● श्री प्रवीण जैन महावीर रोडलाइन्स, दमोह ● श्रीमती रजनी इंजीनियर महेन्द्र जैन, श्रीमती अनिता डॉ. (प्रो.)सुधीर जैन, श्रीमती नीलम राजेन्द्र जैन (एक्साइज़), भोपाल ● श्री जैन अतुल, विपुल, कल्पेश रमेशचंद मेहता, अहमदाबाद ● श्री जैन चंदूलाल राजकुमार काला, कोपरगांव ● श्री जैन संजय मित्तल, रामगंज मण्डी (कोटा) ● श्रीमती जैन विद्यादेवी (वैशाली बेन) अश्विन परिख मनन-सलोनी, श्री जैन हर्षद भाई मेहता, सूरत ● जैन सिंघई श्री इंदरचंद दीपक कुमार विजयकुमार जैन, लखनादौन ● श्रीमती विमलादेवी सुपुत्र नरेश-रीता जैन, अजमेर ● श्री राजेश रोहित शोभित सजल जैन फुटेरा, दमोह ● श्री परितोष बसंत जैन, भोपाल ● श्रीमती सुषमा-डॉ.अजित जैन, भोपाल सुपुत्र इंजी. हर्ष-नीतिका, हैदराबाद, इंजी.अपराजित (यू.एस.ए.) ● श्री प्रेमचंद जैन कुबेर, भोपाल ● श्रीमती जैन इन्द्रा देवी सुपुत्र अनिल, राहुल, निखिल बाकलीवाल, उदयपुर

❄❄❄❄ परम संरक्षक ❄❄❄❄

● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी, ● **कटनी:** श्री पवन कुमार पंकज कुमार जैन।

❄❄❄ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ❄❄❄

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● **रामगंजमण्डी :** सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा।

❄❄ पुण्यार्जक संरक्षक ❄❄

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली।

❄ सम्मानीय संरक्षक ❄

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, गोवा ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, डॉ. जयदीप जैन मोनू, भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● **जयपुर :** श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन ● **सूरत :** श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेशभाई शाह। ● **पथरिया (दमोह) :** श्रीमती जैन उषा पदम मलैया ● **गुड़गांव :** श्री हिमांशु कैलाशचंद जैन।

❄ संरक्षक ❄

● **रीवा:** श्री जैन विजय अजमेरा, डॉ. अश्विनी जैन ● **छतरपुर:** श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● **दिल्ली :** श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● **हस्तिनापुर (मेरठ):** श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर ● **गुड़गांव:** श्री संजय जैन ● **गाजियाबाद :** श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन ● **कलकत्ता:** श्री जैन कल्याणमल झांझरी ● **भोपाल:** श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, ● **कोटा:** श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंजमण्डी ● **गुवाहाटी:** श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी ● **पांडीचेरी :** श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया ● **सूरत :** श्रीमति विमला मनोहर जैन, श्री निर्मल जैन ● **जयपुर :** श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● **उदयपुर:** श्री प्रकाशचंद जैन, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● **इंदौर :** श्री सचिन जैन, स्मृति नगर ● **पथरिया (दमोह) :** श्री मुकेशकुमार जैन (संजय साईकिल) ● **ललितपुर :** श्री अनिल जैन 'अंचल'

❄ विशेष सदस्य ❄

● **दमोह :** श्री मनोज जैन दाल मिल ● **अजमेर :** श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● **सूरत :** श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी ● **भोपाल:** श्री राजकुमार जैन, बिजली नगर ● **कटनी :** श्री शुभमकुमार सुभाषचंद जैन, ● **पन्ना :** श्री महेन्द्र जैन, पवई।

❄ नवागत सदस्य ❄

● **लखनादौन (सिवनी) :** सिंघई श्री सुधीर कुमार अभिषेक जैन, डॉ निशीथ डॉ.रूबी जैन, सिंघई श्री राजकुमार जैन , श्री राहुल श्रीमती रागिनी जैन, श्रीमती शोभा जयकुमार जैन , श्रीमती शशि सुभाष जैन, श्री जीतेश (जीतू) जयकुमार जैन, श्रीमती संध्या जैन, जैन श्री चौधरी अशोक कुमार जैन, श्री शलभ आशीष कुमार जैन, श्री प्रकाशचंद चिरोंजीलाल जैन, डॉ. राजेश श्रीमती अनीता जैन, श्री राजकुमार जैन, श्री चंद्रकुमार रितेश जैन, श्री सिंघई धन्य कुमार जैन, श्रीमती शोभा संजय जैन, श्री प्रमोद जैन (भारती)।

घनसौर नगर में धर्म प्रभावना करती हुई आर्यिका प्रतिभामति एवं आर्यिका सुयोगमति माताजी ससंघ

डॉ. सुधीर जैन सपत्नीक एवं डॉ. अजित जैन जैन सपत्नीक, भोपाल आर्यिकाश्री प्रतिभामति माताजी को शास्त्र दान करते हुये।

आचार्यश्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए श्रीमान चंदकुमार जी जैन सपरिवार लखनादौन।

पाठशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चे सांस्कृति कार्यक्रम करते हुये।

गुरुवर का पाद-प्रक्षालन करते हुये गुड़गाँव से पधारे गुरुभक्त कैलाशचन्दजी- हिमांशुजी सपरिवार।

आहारोपरांत पिच्छिका प्रदान करती हुईं प्रतिमाधारी गुणवंती बेन सूरत, पुरवा से पधारी बहिन संध्या दीदी एवं अन्य भक्तगण।

आर्जवछाया परिवार दमोह आचार्यश्री का मंगल आशीष प्राप्त करते हुये।

पर्यूषण पर्व के समापन पर आचार्यश्री के दर्शनार्थ पधारे केसली नगर के शिविरार्थी।

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

प्रति

श्रमणपुर मंदिर में क्षमावाणी पर्व पर उपस्थित जनसमूह।

क्षमावाणी एवं रथोत्सव कार्यक्रम में शोभायात्रा के दौरान आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ

लोक कल्याण महामंडल विधान के प्रारंभ में ध्वजारोहण करते हुये इन्द्र-इन्द्राणि।

लोक कल्याण विधान में चक्रवर्ती परिवार दीपक कुमार-विजयकुमार चातुर्मास कमेटी अध्यक्ष आचार्यश्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए।

आचार्यश्री का आशीर्वाद ग्रहण करते हुए विधायक श्री मुनमुन राय जी।

षोडशकारण पर्व के समापन पर सम्मानित होती हुई प्रतिमाधारी गुणवंती बेन सूरत।

आचार्यश्री के दर्शनार्थ पधारे डोंगरगांव के श्रेष्ठी श्रीमान् प्रेमी जी सपरिवार।

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन मो.:9826240876 द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. अजित कुमार जैन, MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 फोन : 7222963457, 9425601161